 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ७ अंक ४ दिसंबर 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ एम. ए., एम. एम. सी.
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ एम. ए., एम. एम. सी.

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥रहाउ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥ *(पन्ना ५३६)*

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब देवगंधारी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में मानव-जीवन के असल ध्येय के बारे में बताते हुए मनुष्य को अपना जन्म सफल बनाने का उपदेश कर रहे हैं।

गुरु जी फरमान कर रहे हैं कि मनुष्य के दुनिया में जो माता-पिता, भाई, पुत्र, सगे-सम्बंधी हैं, यहां तक कि पत्नी भी, ये सब उसके तब तक के साथी हैं जब तक वो ज़िंदा है। जब शरीर में से प्राण निकल जाते हैं अर्थात् मनुष्य मृत हो जाता है तो ये सब (दुनियावी) साथी पुकार-पुकार कर कहते हैं कि यह मर गया, इसकी मृत्यु हो गई है। तब उसके ये सब साथी उसे आधी घड़ी (समय का कुछ भाग) भी घर में रखने को तैयार नहीं होते, जल्दी-जल्दी घर से निकाल देते हैं। कहने से तात्पर्य कि मनुष्य जिन लोगों को अपने दुख-सुख का साथी समझता है वे सब उसके ज़िंदा रहने तक के साथी हैं। मरने के बाद मनुष्य के साथ इनमें से कोई नहीं रहता।

शबद की अंतिम पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि सभी इस बात को अपने हृदय में अच्छी तरह से विचारकर देख लीजिए तो लगेगा कि यह जग मात्र मृग-तृष्णा की भांति है, जैसे प्यासे मृग को चमकती हुई बालू पानी का जखीरा प्रतीत होती है और वो इसी भ्रम में दौड़ता-दौड़ता अपने प्राणों को त्याग देता है। कहने से तात्पर्य, इसी प्रकार इस जग के लोग हैं। वे अपनी आध्यात्मिक प्यास की पहचान किए बिना उसे दूर करने की खातिर यहां-वहां भागते रहते हैं और इसी फजूल की भागदौड़ में ही उनका अंत हो जाता है। मनुष्य को सदा परमात्मा के नाम का सिमरन करना चाहिए, उसे ही जीवन का असल साथी बनाना चाहिए। केवल वही मनुष्य के साथ जाता है। नाम-सिमरन की कमाई से मनुष्य का पार-उतारा हो जाता है; उसका जीवन सफल हो जाता है; धन्य हो जाता है। 



ज़िम्मेदारी एवं प्रेरणा

साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी चमकौर की जंग में ज़ालिमों से जूझते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ जी तथा साहिबज़ादा फ़तहि सिंघ जी को सरहिंद के ज़ालिम सूबा वज़ीर खां ने अति यातनायें देते हुए दीवार में चिनवा दिया तथा शहीद करवा दिया। शहादतों के इतिहास में यह बेमिसाल घटना है जिस पर सिक्ख कौम को अत्यंत फख्र है। इतनी अल्प आयु में शहीद होने की वार्ता हर एक इंसान को सोचने के लिए मज़बूर कर देती है कि इतनी शूरवीरता, इतनी सूझबूझ तथा इतनी हिम्मत कहां से प्राप्त हुई? इस सब में पारिवारिक माहौल तथा सिखलाई काम करती प्रत्यक्ष नज़र आती है। छोटे बच्चों का पालन-पोषण जिस ढंग से उनकी दादी माता गुजरी जी तथा मां माता जीतो जी ने किया उसका यह प्रत्यक्ष परिणाम था कि छोटे-छोटे बच्चे भी अपने धर्म से डोले नहीं चाहे उनके सामने मन को लुभाने वाले अत्यंत लालच तथा कठोर यातनाएं देने का भय था। ज़िक्रयोग्य है कि माता गुजरी जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत को उभारने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहादत के बाद माता गुजरी जी ने 'मां' की भूमिका के साथ-साथ पिता वाले सारे फर्ज़ भी निभाए। भविष्य में मुँह फैलाए आ रही आफ्तों के साथ जूझने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को प्रेरणा माता गुजरी जी से भी प्राप्त होती रही। माता गुजरी जी ने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयां झेली हैं। उनके पास इन कठिनाइयों के साथ निपटने की समझ तजुर्बे से प्राप्त हुई थी। सिक्ख धर्म में सबसे पहले महान शहीद श्री गुरु अरजन देव जी ने लाहौर में गर्म तवी पर बैठकर शहादत प्राप्त की। श्री गुरु अरजन देव जी के पोते श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने निर्दोषों पर होते जुल्म को रोकने के लिए दिल्ली के चांदनी चौक में सरेआम शहादत दी। ऐसे महान पुरुष की सुपत्नी होने का सौभाग्य माता गुजरी जी को प्राप्त था। अपने ख़ानदान की शूरवीरता तथा धर्म पर अडोल रहने की कहानियां अपने पोतों को पालने में ही लोरी के रूप में सुनानी आरंभ कर दी थीं। यही शिक्षा इन बच्चों को इतने बड़े जुल्म-ओ-तशद्दुद साके में अडोल रहने के समर्थ बनाने में सहायी हुई।

छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी के शहीद होने से पहली रात को उन्हें अति शीत में, ठंडे बुर्ज में कैद, गोद में ऊष्णता देकर धर्म व ईमान पर कायम रहने की शिक्षा का सबक माता गुजरी जी ने ही पढ़ाया। परिणामस्वरूप अनेक लालचों के बावजूद भी छोटे बच्चे अपने धर्म से न डोले, न भटके, अनेक भय के बावजूद न घबराए तथा अडोल चढ़दी कला में विचरते हुए सूबा सरहिंद की हर एक बात का जवाब देते हुए उसको तुच्छ समझते रहे। गुस्से में बौखलाए हुए वजीर ख़ान ने अपनी पराजय महसूस करते हुए मासूमों को ज़िंदा दीवार में चिन देने तथा ज़िबाह करके शहीद करने का हुक्म दे दिया। इस शहादत ने जहां सिक्ख कौम की नींव पक्की कर दी वहीं साथ ही मुगल राज्य की नींव हिलाने में भी मदद की।

साधारण मनुष्य को असंभव प्रतीत होने वाली इस लासानी शहादत की जड़ें साहिबज़ादों के बचपन की अनुकूल शिक्षा तथा अनुकूल पारिवारिक वातावरण की ज़रखेज़ मिट्टी में लगी हुई थीं। मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि मनुष्य के शख़्सी विकास पर उसके घरेलू वातावरण का गहरा असर होता है, इसलिए मौजूदा

समय में भी अनुकूल वातावरण सृजकर बच्चों को शुरू से ही विरासत के साथ जोड़े रखा जा सकता है। आजकल हमारे सामने जो समस्या मुँह आड़े खड़ी है वो है बच्चों में पतितता और बुरी संगत में पड़ जाने का रुझान। नशाखोरी से बच्चों को बचाना आज के समय की जरूरत है। इस सम्बंध में सारा दोष बच्चों के सर मड़ देना भी ठीक नहीं लगता। इस समस्या से निपटने के लिए पूरी जांच-पड़ताल करने की जरूरत है। इस समस्या के पसरने का एक कारण बच्चों की अधूरी एवं अयोग्य सिखलाई है जिसके लिए हमारा समाज, शिक्षण-संस्थाएं, माता-पिता एवं अध्यापक भी जिम्मेदार हैं। हमारी शैक्षणिक प्रणाली में आज जो कमी महसूस की जा रही है वो है धार्मिक शिक्षा तथा मनोविज्ञान शिक्षा की कमी। आज का अध्यापक तथा माता-पिता बच्चों की मानसिकता को समझने में असमर्थ होता जा रहा है। बच्चों की शख़्सियत को उभारने के लिए अध्यापक एवं माता-पिता कोई विशेष ध्यान नहीं दे रहे। बच्चों को बड़े-बड़े ईनामों का लालच देकर अनकी विरासत से तोड़ने में हमारे इलेक्ट्रानिक मीडिया का भी हाथ है।

बच्चों का मन कोरे कागज़ की तरह होता है। उस पर जो कुछ लिख दिया जाए वही सारी उम्र के लिए उसके जीवन का हिस्सा बन जाता है। बच्चे में परमात्मा द्वारा बख़्शिश अनेक ही सुप्त प्रवृत्तियां एवं शक्तियां होती हैं। इन शक्तियों को वातावरण एवं सिखलाई के साथ जागृत किया जा सकता है जिससे बच्चे की शख़्सियत उसी सांचे में ढलती जाती है। यही कारण है कि बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा बड़ी सावधानी व सूझबूझ के साथ दिए जाने की जरूरत है। बच्चे के जीवन के पहले पांच-छः वर्ष सबसे महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस समय के दौरान बच्चे का स्वभाव, आदतें व विचार बनना शुरू होते हैं। बच्चा स्कूल में जाने लगता है जहां उसकी भेंट पहली बार बाहर के लोगों के साथ होती है, नये दोस्त बनते हैं। इसी समय के दौरान बच्चे की जो आदतें पकती हैं, वे उसकी सारी ज़िंदगी का हिस्सा बन जाती हैं। बचपन में पड़ी बुरी आदतों को बाद में बदलना बहुत मुश्किल हो जाता है, इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा बहुत ही अच्छे वातावरण तथा प्यार भरे माहौल में किसी समझदार व्यक्ति की निगरानी में होनी चाहिए। यहां पर यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि आजकल के माता-पिता अपने बच्चों को मातृ-भाषा से तोड़कर अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ाने में प्राथमिकता देते हैं, जहां बच्चा अपने सभ्याचार को छोड़कर विदेशी सभ्याचार की शिक्षा ही प्राप्त करता है। अनजाने में माता-पिता बड़ी-बड़ी फीसें भरकर अपने ही बच्चों को अपने सभ्याचार से तोड़ रहे हैं। यह उनको उस समय समझ में आता है जब बच्चा पूरी तरह से विदेशी सभ्याचार को धारण कर चुका होता है।

बच्चे की शख़्सियत को उभारने में मां का भी विशेष स्थान होता है। मां बच्चे को सूझबूझ के साथ जो चाहे बना सकती है। इसमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि मां बच्चे को जैसा बनाना चाहती है उसको पहले खुद वैसा बनना पड़ेगा। आज की मां बच्चों को चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मामा-मामी आदि की जगह अंकल-आंटी बोलना सिखाने में ही गर्व महसूस कर रही है। परिणामस्वरूप हमारे बच्चों के पास अपनी भाषा का शब्द-भंडार ही इकट्ठा नहीं होता तथा वे अपनी विरासत से टूटते जाते हैं। अगर हम गुरमति विचारधारा के अनुसार खुशहाल समाज सृजित करना चाहते हैं तो हमें अपने बच्चों को रूहानी तथा चारित्रिक पक्ष से मज़बूत करना पड़ेगा। हमें अपने बच्चों को साहिबज़ादों की शहीदियों की बातें सुनानी पड़ेंगी। बच्चों को नित्तनेमी बनाने के लिए खुद नित्तनेमी बनकर उनके समक्ष मिसाल बनना पड़ेगा। बच्चों को अन्य भाषाओं के साथ-साथ अपनी मातृ-भाषा का ज्ञान, अपने सभ्याचार का ज्ञान देना अति जरूरी बनाना होगा। अगर हम सारे अपने इस फर्ज़ की पहचान करके इस पर चलने का पक्का निश्चय कर लेंगे तो यही साहिबज़ादों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। 

शहादत : आत्मिक विकास का उत्कर्ष

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

सिक्ख गुरु साहिबान और गुरसिक्खों के बलिदान इतने महान और अद्‌भुत हैं कि विस्मित रह जाना पड़ता है। जहान में इनका कोई सानी नहीं है। वस्तुतः ये बलिदान सोने की चमक की तरह हैं जो किसी अन्य धातु की विशेषता नहीं है। सिक्ख पंथ इन बलिदानों के कारण एक अनूठा पंथ बन गया है। आखिर कैसे इतने श्रेष्ठ बलिदान संभव हो सके?

संसार का इतिहास बलिदानों से भरा पड़ा है। इनमें अधिकतर बलिदान संयोगवश, संवेगों के अतिरेक में, कर्त्तव्य-पालन के दौरान हुए अथवा अपरिहार्य परिस्थितियों के चलते। सिक्ख कौम के बलिदानों का इतिहास पूरी तरह अलग है। बलिदान की नींव तो श्री गुरु नानक देव जी ने ही रख दी थी विकारों का परित्याग करके, स्व को मिटाना सिखाकर। श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी ने आत्मशून्य और निष्काम होकर गुरु-पंथ के मार्ग पर चलने की दीक्षा स्वयं अपने आचार और विचार से दी। स्व को मिटाकर स्वयं को परमात्मा के अधीन कर देना और परमात्मा की इच्छा को धारण कर लेने से बड़ा बलिदान कोई और हो ही नहीं सकता।

इस बलिदान को सांसारिक प्रतीक देने वाले पहले गुरु थे श्री गुरु अरजन देव जी। गुरगद्दी पर आसीन होने के बाद गुरु-विचार के प्रसार-प्रचार के लिए उन्होंने बहुआयामी कार्य किये। जगह-जगह सिक्ख संगत कायम की गयी। गुरबाणी का प्रसार हुआ। अनेक स्थानों का निर्माण किया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संयोजन और प्रकाश हुआ। बड़ी संख्या में हिंदू-मुसलमान गुरु-घर से जुड़ने लगे। यह मुगल शासक जहांगीर को सहन न हुआ और उसने गुरु साहिब को गिरफ्तार करने का आदेश जारी कर दिया। गुरु साहिब के समक्ष अनेक विकल्प खुले थे, किंतु उन्होंने शहादत को चुना। पूरी तरह शांत और गुरबाणी में लीन रहकर उनका शारीरिक प्रताड़ना सहना, उबलते हुए पानी में बैठना, तन पर गर्म रेत सहना, गर्म लोहे की तवी पर बैठना और फिर रावी नदी के ठंडे पानी में बैठना, बड़े से बड़े अन्याय के विरुद्ध सहज और संतोष की ताकत को भली-भांति सिद्ध करता है।

इसी इतिहास को दिल्ली के चांदनी चौक में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दोहराया, जिन्होंने पूर्ण स्थिर, शांतचित्त रहकर प्रातः स्नान किया, स्वच्छ वस्त्र पहने और चौकड़ा (पालथी) मारकर बैठ बड़े ही प्रेमभाव से जपु जी साहिब का पाठ किया, अरदास की और परमात्मा के चरणों का ध्यान कर शीश निवाया। उनके शीश निवाते ही जल्लाद ने उनका शीश धड़ से अलग कर दिया :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥ *(पन्ना १४२९)*

बल आवश्यक होता है भय से मुक्त होने

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३*

के लिए, आशंकाओं, दुविधाओं से उबरने के लिए। बलिदान वही दे सकता है जिसमें यह बल हो। नौ वर्ष के बाल गोबिंद राय (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) में यह बल था तभी वे अपने पिता को बलिदान के लिए कह सके। साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी पांच-पांच सिंघों के जत्थे के साथ चमकौर साहिब के मैदान में दस लाख की मुगल सेना को टक्कर देते हुए इसी बल के कारण गर्व से शहीद हुए। छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी (आठ वर्ष) और बाबा फ़तहि सिंघ जी (पांच वर्ष) ने इसी बल से तनिक भी विचलित न होते हुए स्वयं को दीवार में चिनवा लिया और सहज आनंद में अपने को कुर्बान कर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं अपने हाथों से तैयार कर अपने बेटों-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी को युद्ध के मैदान में भेजते हैं। माता गुजरी जी अपने नन्हे पोतों को खुद संवारकर दुलार करती हैं और गुरु-घर की शान बनाए रखने की हिदायत देकर वजीर खां की कचहरी में भेजती हैं। एक पिता और दादी ने कैसा आत्म-बल प्राप्त कर लिया होगा कि वे अपने हाथों से अपने बच्चों की शहादत तय कर सके? यह शहीदियों का आगाज़ था। फिर बलिदानों का एक लंबा इतिहास बना जिसने सिक्ख कौम को लासानी बना दिया। ये आम बलिदान नहीं थे। यह सिक्खों का आत्म बल ही था जिससे ऐसे महान बलिदान संभव हो सके। यह बल है परमात्मा पर अथाह विश्वास और आस्था का। गुरमति ने यह विश्वास करना सिखाया कि परमात्मा ही एकमात्र और सर्वोच्च शक्ति है तथा सब कुछ उसी के वश में है। जब गुरसिक्ख यह विश्वास धारण करता है तो परमात्मा उसकी सहायता करता है। इस विश्वास के कारण वह निर्भय हो जाता है और सांसारिक शक्तियां उसे मिथ्या दिखने लगती हैं।

सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥
नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥
मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥३॥
चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥
साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥
मै धनु दीजै हरि अंम्रित नामु ॥४॥
रयति महर मुकदम सिकदारै ॥
निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥
अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥५॥
निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥
जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥
ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥६॥

(पन्ना २२७)

उपरोक्त वचन गुरु नानक साहिब के हैं जिन्होंने झूठी सांसारिक ताकतों को बेनकाब करते हुए उनसे तनिक भी भयभीत या प्रभावित न होने की सीख दी। उन्होंने कहा कि जितने भी शक्ति-सम्पन्न, धनवान, ओहदेदार दिख रहे हैं इनमें से कोई भी रहने वाला नहीं अर्थात् स्थायी नहीं है। सभी को अपने कर्मों का फल मिलने वाला है। इसके साथ ही गुरु साहिब ने सही राह दिखाते हुए कहा कि स्थिर शक्ति तो परमात्मा की है। सृष्टि का सृजन और विनाश उसी के हाथ में है। वही सबकी मर्यादा का रक्षक और सहायक है। परमात्मा की शरण में चले जाने से किसी भी प्रकार की चिंता या भय नहीं रह जाता। गुरसिक्खी का मार्ग सिक्ख को उस बल की ओर ले जाने वाला मार्ग है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को जब वजीर ख़ान की कचहरी में बहकाने के

प्रयास किये गये और तमाम प्रलोभन दिए गए तो उन्हें पता चला कि ये सारे शक्तिशाली लोग झूठ पर टिके हैं। परमात्मा का नाम चित्त में लिए वे स्थिर रहे। इसी अटूट विश्वास के आधार पर साहिबज़ादों ने निडर होकर उत्तर दिया कि वे श्री गुरु अरजन देव जी के वंशज और श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पोते हैं। वे धर्म के लिए शहीद होना जानते हैं किंतु अपना धर्म नहीं छोड़ सकते ज़िंदा रहने के लिए। निश्चय ही उन्हें गुरु नानक साहिब की यह शिक्षा भी याद रही होगी और उनके रक्त में घुली होगी :

गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥
गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥
पीवै अंम्रितु ततु विरोलै ॥३॥
सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥
मनु तनु अरपिओ अंतरगति कीनी ॥
गति मिति पाई आतमु चीनी ॥४॥ (पन्ना २२७)

श्री गुरु नानक साहिब का संकल्प ऐसे गुरसिक्ख तैयार करने का था जो आत्मिक रूप से इतने सबल हो जाएं कि गुरु-पंथ पर अडोल रह सकें और सहज अवस्था में रहते हुए सच के साथ खड़े रहें। वे सतिगुरु से मिल कर रहें और गुरु-शबद को मानें भी। वे मन और तन से परमात्मा को समर्पित होकर उसे अपने मन में बसा लें।

जिन लोगों ने भी अपनी शक्ति और सम्पदा के बल पर संसार में अत्याचार किए वे अंदर से डरे और सहमे लोग थे। उन्हें अपना राज्य, अपना धन जाने का डर था, इसलिए उन्होंने आक्रामक होकर उन्हें समाप्त करना चाहा, जिनसे वे असुरक्षा महसूस कर रहे थे। उनके मन में कामनाएं, वासनाएं, लोभ, मोह था, इसलिए वे डरे हुए थे। मन में विकार होने के कारण वे अंदर से परमात्मा से टूटे हुए लोग थे। गुरु साहिबान और गुरसिक्ख, जिन्होंने धर्म हेतु अपना बलिदान दिया, आंतरिक और बाहरी दोनों ही रूप से परमात्मा में रमे हुए निर्भय स्वरूप हो गए थे :

राजा राम की सरणाइ ॥
निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥ (पन्ना ८९९)

जो परमात्मा से जुड़ा हुआ है वही निर्भय है। यह बात उस समय भी सिद्ध हुई जब परिवार के बलिदान के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संगत को दर्शन देते हुए भाई डल्ला के गांव पहुंचे। भाई डल्ला एक असरदार आदमी था, जिसने एक बड़ी फौज भी तैयार कर रखी थी। उसने गुरु साहिब से उलाहना भरे लहजे में कहा कि यदि उसे पता होता कि यह सब कुछ हो गया तो वह और उसके जवान जरूर गुरु जी के काम आते। गुरु साहिब ने कहा कि बल शरीर से नहीं धर्म पर चलने से आता है। इसी बीच कुछ संगत लाहौर से गुरु साहिब के दर्शन के लिए आ पहुंची। एक सिक्ख ने गुरु जी को बढ़िया बंदूक भेंट में दी। गुरु साहिब ने बंदूक की जांच के लिए भाई डल्ला से उसके किसी जवान को सामने खड़ा होने को कहा तो सभी कतराने लगे। जब गुरु साहिब ने अपने सिक्खों की ओर देखा तो दो सिक्ख दौड़ कर सामने आ गए और आगे खड़े होने के लिए विवाद करने लगे। गुरु साहिब ने दोनों को शांत किया और बंदूक से गोली चलाई जो उनके सिर के ठीक ऊपर से निकल गई। वे दोनों सिक्ख अडोल खड़े रहे। वे अमृतपान किए हुए, परमात्मा से जुड़े हुए गुरसिक्ख थे और मृत्यु के भय से रहित हो गए थे।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

श्री अनंदपुर साहिब और चमकौर साहिब के युद्ध

-डॉ. जगजीत कौर*

कौन सो बीर उदयो जग मै,
जिन औरंग साह सों धूम मचाई। . . .३॥४३॥
(अध्याय १०)

'गुर बिलास पातशाही १० कृत भाई कुइर सिंघ के अनुसार समस्त देशवासी आश्चर्यचकित हो देख रहे थे कि अब ऐसा कौन-सा महाबली योद्धा पृथ्वी पर अवतरित हो आया है, जिसने उस औरंगज़ेब बादशाह को बेचैन कर दिया है, जिसके पास चालीस लाख से भी ऊपर फौज है, जिसके पास अति आधुनिक तोपची, तोपखाने और गोली-बारूद का अखंड भंडार है, सभी जिसके भय से कांपते हैं --*"जोइ नीम है अलाह, जा लखै कंपत बयोम धर सभ दीप कंपत जाह।"*

ये महाबली योद्धा थे नानक निर्मल पंथ की दसवीं ज्योति, अगम्य पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। इस सोए हुए शेर को जगाने का दुस्साहस पहाड़ी राजाओं और उसके सहायक मुगल आततायियों ने किया था-- *"शेर किंधो सपतो जगवायो।"* और जब शेर जाग गया तो उसने सारे जंगल को ही जगा दिया। छोटे-मोटे कायर से कायर ने भी शेर की दहाड़ और उसकी प्रदत्त शक्ति का सहारा लेकर वो कर दिखाया जो किसी करिश्मे से कम नहीं था। इसीलिए मिस डोरथी फील्ड ने कहा कि "इस शेर ने समाज द्वारा छेके गए अछूत हिंदोस्तानी, आलसी और असंतुलित होने के कारण बदनाम देशवासियों की कायाकल्प कर उन्हें एक उत्तम कोटि के धैर्यवान योद्धा बना दिया। यह भी किसी करिश्मे से कम नहीं था। **"That it should have transformed the out caste Indian a notoriously indolent and unstable person into a fine and loyal warrior, is little short of a miracle." (The Religion of sikhs, P.32)**

यह कायाकल्प हुई थी सन् १६९९ की वैसाखी के दिन, जब खंडे-बाटे की पाहुल लेकर कौम शस्त्रधारी बनी। सबके हाथों में स्वाभिमान और स्वरक्षा के लिए शस्त्र पकड़ाए गए। जाति, कुल के भेदभाव से ऊपर उठ उन्हें संयमित, चरित्रवान और सदाचारी जीवन-युक्ति देकर समझाया गया कि :

असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर ॥
सैफ सरोही सैहथी इहै हमारै पीर ॥ (दसम ग्रंथ)

साथ में मृत्यु से जूझना सिखाया गया कि मौत से भाग कर कहां जाओगे?

भाजत काल ते जाहि नरं कहि, आगे ही लेवत काल प्रकारी।
संमुख मेल करो तजि बेमुख, जावन काल ते चाहि अपारी।
आगे ही काल धरे असि गाजत, जाहि ते नासत लोक सुधारी ॥१५॥४८॥ (गुरबिलास पा: १०)

यही बेखौफ शूरवीरता उन द्रोहियों के गले नहीं उतरती थी जिन जाति-अभिमानियों ने सदियों से जनमानस को शोषण, उपेक्षा और बेगारी का केंद्र बना रखा था। श्रद्धालु वीर बहादुरों की संख्या बढ़ती गई। प्रेम से गुरु के लिए लाए जाने वाले उपहारों की संख्या बढ़ती

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

गई। गुरु का तेज प्रताप दिनों-दिन बढ़ता गया और साथ ही श्री अनंदपुर साहिब नगरी के आसपास के पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या और जलन भी। यही ईर्ष्या पुन: युद्ध में बदल गई। युद्धों का कारण पहाड़ी राजाओं की जलन थी। इतिहासकार एकमत हो मानते हैं कि गुरु जी पर युद्ध थोपे गए और उन्हें अपनी सुरक्षा में युद्ध करने पड़े।

गुरुदेव जी के बढ़ते तेज प्रताप को सहन न कर सकने वाले पहाड़ी राजाओं में सबसे मुखरित स्वर कहिलूर का राजा भीमचंद था। इसने आसपास के पहाड़ी राजाओं को भी अपने साथ मिला लिया और एक पत्र तैयार कर लाहौर के नवाब की सहायता से दिल्ली दरबार पहुंचा। लाहौर के नवाब ने पूछा भी भीमचंद से कि तुम्हें गुरु जी से क्या परेशानी है? उसने जो उत्तर दिया, 'गुर बिलास' के कर्ता बताते हैं कि गुरु दरबार में आने वाली भेंटें और उसमें भी केरल से आया सफेद हाथी उसे चुभता रहता था :

पूरब राजए अधिक सुहायो। . . .
दूसर सिंध ते पार अयो सुन, तीसर दक्खन देस ते आयो।
चौथवौ जोग सु सुंदर सेत है,
आवत एक पदी ते सुभायो ॥३४॥१००॥

(अध्याय १०)

"इनके हाथी देखने योग्य हैं। एक पूरब देश आसाम से, दूसरा सिंधु पार से, तीसरा दक्षिण देश से, चौथा श्वेत हाथी केरल से आया है।"

नवाब को भड़काकर दिल्ली दरबार से शाही सेना की अनुमति ली गई। सेना श्री अनंदपुर साहिब की ओर चल पड़ी। पहाड़ी राजाओं ने अपनी सेना तैयार कर ली। जब शाही सेना सरहिंद के निकट पहुंची तो पंजाब के सिक्ख श्रद्धालुओं को भनक पड़ी। उन्होंने एक पत्र लिखकर गुरु जी के पास भेजा कि औरंगज़ेब ने सैयद खां की अगुआई में भारी फौज रवाना की है और सरहिंद के नवाब को भी सहायता करने का आदेश किया है। पहाड़ी राजे भी साथ हैं। गुरु जी ने इसी अनुसार श्री अनंदपुर साहिब में तैयारी शुरू कर दी। युद्ध की योजना बनाते हुए गुरु साहिब ने आदेश दिया कि जिस रास्ते से मुगल और पहाड़ी राजा आ रहे हैं वह मार्ग रोक लिया जाए। वहां पहाड़ी गुफाओं में मोर्चाबंदी की जाए और जैसे ही दुश्मन उस मार्ग से गुज़रे अचानक धावा बोल दिया जाए। इस सचेत कार्य के लिए गुरु जी ने साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी को भेजा, जिनकी आयु उस समय केवल १४ वर्ष की थी। उन्होंने बहादुर सिंघों के साथ विपक्षी दल को बीच रास्ते में रोक लिया। विपक्षी दल के सिर कट-कटकर नीचे गिरने लगे। फिर भी उनकी संख्या बहुत अधिक थी। गुरु जी ने सिंघों को प्रोत्साहित करने के लिए एक ऊंचे स्थान पर मोर्चा बांध लिया। भीमचंद के सुझाने पर लाहौर के नवाब ने गुरु जी को निशाना बनाना चाहा। तोपें उसी ओर दाग दीं। पूरा दिन तोपें दागते थक गए, पर गुरु जी का बाल भी बांका न कर सके। गुरु जी जानते थे कि हारे सैनिक शांति से नहीं बैठेंगे, श्री अनंदपुर साहिब को घेरा जाएगा, अत: गुरुदेव ने श्री अनंदपुर साहिब के सभी किलों-- तारागढ़, बिजैगढ़, दमदमा, अगंमगढ़ और लोहगढ़ के मोर्चे मज़बूत कर दिए। 'केसगढ़' के किले का मोर्चा गुरु जी ने आप संभाला। बाकी पर बाबा अजीत सिंघ जी तथा अन्य सिंघों को तैनात किया। अगंमगढ़ में पूरा परिवार और तीन साहिबज़ादे सुरक्षित

किए। शत्रुओं ने तोपों की बौछार आरंभ की परंतु किले ऊंचे होने के कारण तोपों का प्रहार वहां तक पहुंच ही न सका। इधर 'केसगढ़' से जब गुरु जी तोप के गोले छोड़ते तो उनेकों विरोधी सैनिक धराशायी हो जाते। तोप के गोले बिजली की तरह कड़कते, प्रहार करते। भाई कुइर सिंघ के शब्दों में :

केसगढ़ ते छुटत इम जिम करत बिजली ओप को

ता कर हते सब तुरक गन गोफुन न करने पावही।६०।१७८।

रात होने पर मुगल थककर सो गए। अमृत वेला में गुरुदेव के बहादुर सिंघ-- भाई शेर सिंघ और भाई नाहर सिंघ जब बाहर निकले तो मुगलों को सोया देख उन्होंने उनकी तोपों का मुख घुमा उनकी ओर गोले छोड़ दिए। ५०० मुगल वहीं हाथों-हाथ खत्म हो गए। हड़बड़ी में वे आपस में ही लड़ने-मरने लगे। भगदड़ मचाते, भागते कुछ तो चरन गंगा में ही बह गए। विजय हाथ से खिसकती देख उन्होंने गुरु जी से संधि कर ली। गुरुदेव कुछ दिनों के लिए निरमोहगढ़ जा टिके। श्री अनंदपुर साहिब की यह पहली जंग सन् १७०० ई में हुई।

सन् १७०१ ई और १७०२ ई के वर्षों में विशेष युद्ध तो नहीं हुए पर छिटपुट घटनाएं होती रहीं। इन्हीं छिटपुट घटनाओं में भंगाणी जंग का वीर बहादुर भाई साहिब चंद शहीद हुआ। सन् १७०२ ई के आरंभ में मुगलों और पहाड़ियों की सेना फिर सरहिंद में इकट्ठी होने लगी। गुरु जी ने समय की नज़ाकत को देखते हुए श्री अनंदपुर साहिब वापिस आने का मन बनाया। सभी सिक्ख श्रद्धालुओं को श्री अनंदपुर साहिब इकट्ठा होने का आदेश दिया। इस बीच भीमचंद की सेना से निरमोहगढ़ में ही मुठभेड़ हुई और पुनः बसोली में, पर गुरु जी के सिक्ख सावधान थे। उन्हें ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा। इस बीच गुरुदेव कुरुक्षेत्र की ओर गए और वापसी में चमकौर साहिब में गुरु जी पर फिर हमला किया गया, लेकिन गुरु जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व को कोई हानि नहीं पहुंची।

सन् १७०४ के आरंभ में पहाड़ी राजाओं की सम्मिलित सेना और मुगलों की भारी फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर चढ़ाई कर दी। सिंघों के हौसले भी पूरे बुलंद थे। भाले, बरछे, तेग, गोला-बारूद आदि से दुश्मनों के छक्के छुड़ाए जा रहे थे। ऐसा घमासान युद्ध हुआ कि ऊपर से किले के झरोखों से गोला-बारूद की मार पड़ती और नीचे से तेग की, नेजों की। मुगल सेना का भारी नुकसान हुआ। दूसरे दिन का युद्ध पहले दिन से भी अधिक घातक रहा। इसमें गुरु साहिब और साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी खुद शरीक हुए। मुगल सेना की किले पर कब्ज़ा करने की कोशिश नाकाम रही। उनकी जीत का केंद्र अनंदगढ़ का किला था, पर वे कामयाब न हो सके। इसी जंग में ब्रह्मज्ञानी भाई घनईआ जी दुश्मनों को भी पानी पिलाते रहे। उनकी शिकायत भी हुई, पर वे गुरु जी की बख़्शिश प्राप्त कर गुरु-पंथ के अनन्य सेवादार बने।

अब सम्मिलित सेना को लगने लगा कि वे लड़कर जीत नहीं सकते, इसलिए उन्होंने नीति बदली। श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया। बाहर आने-जाने के सभी रास्ते बंद कर दिए गए। किले के बाहर आना-जाना कठिन कर दिया। किले के अंदर जाने वाले पानी के स्रोत बंद कर दिए गए। पानी की जबरदस्त किल्लत हो गई। धीरे-धीरे रखा अनाज का भंडार भी खत्म होने लगा। इस बीच पहाड़ी राजाओं ने

किले का द्वार तोड़ने की योजना बनाई। जसवाल राजा की सलाह पर तय किया गया कि भयानक भूरे हाथी को शराब पिलाकर, मतवाला कर किले के द्वार के सामने खड़ा कर दिया जाये और वह टक्कर मारकर द्वार तोड़ देगा। बाद में तोपची और सेना किले में प्रवेश कर, सिंघों को खत्म कर किले पर कब्ज़ा करेगी। सिंघों के द्वारा गुरु जी तक यह बात पहुंचाई गई। गुरु जी ने वीर बहादुर दुनीचंद को हाथी का मुकाबला करने का आदेश दिया, पर वह डरकर रात के अंधेरे में किले की पिछली दीवार फांदकर भाग निकलने के उपक्रम में फिसल गया, टांग टूट गई, घर भागा, जहां सांप के काटने से मृत्यु को प्राप्त हुआ। *"तिन मै एक बचित्तर सिंघ राजपूत रनधीर पोता माई दास को बहिरूपीए बंस प्रगट भए सभ जगत मैं जिउ देवन महि हंस।" (भाई सुक्खा सिंघ, गुरबिलास, १५:१८०)* गुरु जी ने भाई बचित्तर सिंघ को थापड़ा देकर उसे अपनी नागिनी नेजा दिया। कमरकस्सा कर भाई बचित्तर सिंघ द्वार पर पहुंच गया। जैसे ही द्वार खुला, हाथी चिंघाड़ता हुआ आगे बढ़ा। भाई बचित्तर सिंघ ने पूरे बल से नेजा हाथी के मस्तक के बीचो-बीच धंसा दिया। रक्त की धारा बह चली। हाथी उल्टे पांव चीखता-चिंघाड़ता हुआ, शत्रु-सेना को ही रौंदता हुआ निकल गया। मुगल सेना का भारी नुकसान हुआ। सिंघ संख्या में तो कम ही रह गए थे, परंतु वे थोड़े-थोड़े किले से बाहर निकलते। कुछ सामने होकर लड़ते, कुछ पीछे से शत्रुओं को घेर लेते। उन्हें दोहरी मार मारते :

एक सूर सनमुख लरै करत बीर संग्राम।
एक भाजि पाछै भिरै तिन ते होत न काम ॥२६॥४३०॥
सूर सबै ऐसी बिधि करही।
दाइ धाइ फउजन मै परही।
भिरे सूरमा बहुत अपारा।
करत मार केते हथिआरा ॥२७॥४३१॥

(स्री गुर सोभा, कृत कवि सेनापती)

यद्यपि सिंघों के हौसले बुलंद थे, पर समस्या अन्न-जल की थी। कुछ सिंघ गुरु जी पर किला खाली करने का दबाव डाल रहे थे। इनमें ४० सिंघ तो ऐसे थे जो गुरु जी को 'बेदावा' (न तुम हमारे गुरु, न हम तुम्हारे सिक्ख) लिखकर दे आए थे और अपने घरों में चले गए थे। इधर शत्रु-पक्ष भी लंबे समय से घेरा डाले बैठा परेशान हो गया था। ऊपर से सर्दी की ऋतु आ गई थी। गुरु जी को उन्होंने प्रार्थना की कि वे शांति से परिवार एवं सिक्खों सहित किला छोड़ कर चले जाएं। उन्हें सुरक्षित जाने दिया जाएगा। मुगलों ने कुरान की कसम और हिंदुओं ने गाय की कसम खाई। इधर सिंघों का भी दबाव बढ़ रहा था। हालांकि गुरु जी जानते थे कि कसमें प्रभावहीन हैं, फिर भी दिसंबर माह की शीत-वर्षा-आंधी भरी १७०४ ई की रात्रि को श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दिया गया। हुआ वही जैसा गुरुदेव जानते थे। अभी सिक्ख फौज सहित गुरुदेव किले से बाहर निकल कुछ दूर ही चले थे कि शाही फौजों ने हमला कर दिया। गुरु जी ने भाई उदै सिंघ को पचास सिंघ दे शाही टिब्बी पर मोर्चा बांध मुकाबला करने को कहा। भाई उदै सिंघ और उसके साथी सारे सिंघ लड़ते-लड़ते हज़ारों को मार खुद शहीद हो गए। तब तक गुरुदेव का काफिला सरसा नदी के तट पर पहुंच चुका था। सामने से विशाल मुगल सेना आ चढ़ी। शीत काल की बर्फानी रात्रि। नदी का बर्फीला शीतल जल। गुरु जी का सारा परिवार तितर-बितर हो गया। कीमती सामान, बहुमूल्य साहित्य-

भंडार, अनेक सिंघ सभी नदी में बह गए। माता गुजरी जी दो नन्हें साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी सहित मोरिंडा पहुंच गए। गुरुदेव ४० सिंघों और दो बड़े साहिबज़ादों-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी सहित चमकौर साहिब पहुंचे। मुगल सेना पीछा कर रही थी। चमकौर साहिब में एक कच्ची गढ़ी को किलानुमा मान युद्ध का संचालन किया गया।

चमकौर साहिब का युद्ध संसार का अनोखा युद्ध था। एक ओर दस लाख की शाही फौज, दूसरी ओर केवल ४० भूखे-प्यासे, थके-मांदे सिंघ सूरमे। फिर भी सिंघों ने पांच-पांच के मोर्चे बांध कर वीरता का अद्भुत प्रदर्शन कर विश्व इतिहास में मिसाल पेश की। गुरु साहिब ने स्वयं (बाद में) जफ़रनामा में लिखा :

हम आखिर चि मरदी कुनद कारजार ॥
कि बर चिहल तन आयदश बेशुमार ॥४१॥
चरागे जहां चू शुदह बुरकापोश ॥
शहे शब बरामद हमा जलवा जोश ॥४२॥

ऐसे असंतुलित युद्ध में अकेली वीरता क्या कर सकती है, जब केवल ४० बंदों पर बेशुमार फौजी अचानक चढ़ आएं? फिर भी जब दुनिया के दीपक अर्थात् सूरज ने अपना मुंह छुपा लिया था और रात का राजा (चंद्रमा) पूरी सज-धज से निकल आया था, तब जाकर दिन की लड़ाई बंद हुई। गुरु के सिंघ दिन भर लड़ते शहीद होते रहे और *"सवा लाख से एक लड़ाऊं"* की मिसाल पेश कर हज़ारों को मौत के घाट उतारते रहे। गुरु साहिब ने तो अनूठी मिसाल पेश करते हुए स्वयं अपने हाथों से अपने बड़े लख्ते-जिगर बाबा अजीत सिंघ जी को अस्त्रों-शस्त्रों से सजा रणभूमि में शहीद होने को भेजा था। बाबा अजीत सिंघ जी ने केवल १७ साल की आयु में जिस रण-कौशल का प्रदर्शन किया, कवि सेनापति के शब्दों में :

चलो रणजीत जब जाइ रण मै परो कीओ संग्राम ऐसे अपारे।
लोथ पर लोथ तह डारि केती दई भभक करि रकत हुइ चले नारे।
लीए करि सांग तिह आंग पर धरति है तबै ततकार तिह ठउर मारे।
भुजन पै जोर करि लेत उठाइ कै सबन दिखलाइ भुइ माहि डारे ॥३७॥५०६॥१२॥

(स्री गुर सोभा)

बाबा अजीत सिंघ जी इतने बलशाली रणजीत हैं कि तेगों-नेज़ों से लाशों के ढेर लगा रहे हैं; बांहों पर शत्रु को उठा भूमि पर पटक देते हैं। लड़ते-लड़ते उनके शरीर पर भी अनेकों घाव लगे हैं। रक्त-स्राव से शरीर रंगा गया है, मानो *"छिरक छिरक तन रंगिओ फागन की रुत कीन।"* (स्री गुर सोभा, अध्याय १२) *"सूर अनगिनत तह ठउर मारे"*-- अनगिनत शत्रुओं को मार अंत में बाबा अजीत सिंघ जी रण-भूमि में शहीद हो गए। इधर पिता गुरुदेव का जिगरा देखिए! शौर्य-प्रदर्शन करते, गिरते, शहीद होते सुपुत्र को देख प्रसन्न हो रहे हैं; अकाल पुरख का धन्यवाद कर रहे हैं कि खालसा पंथ की साजना का उद्देश्य पूर्ण हुआ। जिस लक्ष्य को ले वे जगत में अवतरित हुए थे, वो लक्ष्य पूर्ण हुआ। खालसा निर्भय हो चुका है :

लगी कार असवार कै कीनो काम अपार।
पीओ पिआला प्रेम का मगन भयो असवार ॥५०॥५१९॥
तांहि समै ऐसे कहिओ गोबिंद सरन बीचार।
आज खास भए खालसा सतिगुर के दरबार ॥५१॥५२०॥

(गुर सोभा)

अब गुरु जी दूसरे महाबली साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी को युद्ध-भूमि में अपने हाथों से

अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित कर भेज रहे हैं। साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी, उम्र केवल १४ वर्ष, बड़े भाई की भांति ही शौर्य-प्रदर्शन कर रहे हैं :

दल मै जु धसिओ बलवंत बली इह भांत सो तीर चलावत है।
जिह के उर मारत देत गिराइ परे रन मे बिललावत है।
गिरी लोथ पै लोथ अपार तहां खरी जोगन पत्र पूरावत है।
इह भांति जुझार करै रन मार सुयौ रण मै रण पावत है ॥५६॥५२५॥

साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी को रण-भूमि में घिरता देख गुरु जी स्वयं हाथ में नेजा ले प्रवेश करते हैं। हाथ में तीर-कमान भी है। वे अनेक तीरों का निशाना बने। इसी उपक्रम में *"इक उंगल पोर रही तिह ठाए।"* गुरु जी की अंगुली की एक पोर कट जाती है, पर अदम्य उत्साह तेजहीन नहीं होता। साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी *"जूझत ही प्रभ लोक सिधाए।"* कवि सेनापती के शब्दों में :

धंनि धंनि गुरदेव सुत तन को लोभ न कीन।
धरम राख कल मो गए दादे सो जस लीन ॥७४॥५४३॥
(अध्याय १२)

इस प्रकार श्री अनंदपुर साहिब की जंग हो या चमकौर साहिब की गढ़ी की जंग, एक तथ्य तो उभरकर सामने आता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत का ही प्रभाव था जिसने ऐसे धैर्यवान सिंघ सूरमे पैदा किए जो कठिन समय में भी, अनुकूल परिस्थितियां न रहते हुए भी निरंतर चढ़दी कला में रहे। गुरु नानक पातशाह ने जो सत्य का मार्ग दिखाया था, रूहानी अगम्य बाणी का जो दीप प्रज्वलित किया था, उसके प्रकाश में गुरु के सिंघ आत्मसम्मान, आत्मबल और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते गए मरजीवड़ों के काफिले के रूप में। 

शहादत : आत्मिक विकास का उत्कर्ष

(पृष्ठ ७ का शेष)

सिक्ख इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अंकित बलिदान की गाथाएं इस बात का प्रमाण हैं कि गुरसिक्ख आत्मिक रूप से इतने सबल और मन से परमात्मा की आस्था के इतने दृढ़ धारणी हैं कि वे अपने तन को भी धर्म के मार्ग पर न्यौछावर करने से पीछे नहीं रहते :

जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरों ॥

यदि हम कौम की शानदार विरासत और बलिदानों के इतिहास पर गर्व करते हैं तो हम सिक्ख रहित मर्यादा से दूर क्यों हैं? बलिदानों की दृढ़ता से प्रेरणा लेकर क्यों नहीं हम अपने जीवन को सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार शुद्ध, स्वच्छ और संयमित बनाते? इतिहास की बात करते हुए हम अपने वर्तमान को भी क्यों नहीं गौरवशाली बनाने का संकल्प लेते? वर्तमान ही इतिहास बनता है। कौमें इतिहास से प्रेरणा लेती हैं, लेकिन आगे बढ़ती हैं हर रोज किए जाने वाले प्रयासों से। हर सिक्ख हर रोज नित्त-नेम पर दृढ़ हो, गुरु-शबद उसका विचार और सिक्ख रहित मर्यादा उसका आचार हो तभी सिक्ख कौम की असली शान बनती है :

पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥
(पन्ना १७)

शहीदी-वृत्तांत : छोटे साहिबज़ादे तथा माता गुजरी जी

*-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'**

कुर्बानियों के विश्व इतिहास और साहित्य में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरबंसदानी के संपूर्ण परिवार द्वारा मानवीय स्वतंत्रता, कल्याण, सच्चाई और धर्म की खातिर दी गई शहादत का वर्णन व गुणगान शब्दों में नहीं किया जा सकता। उनके छोटे साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी द्वारा बाल्यावस्था में दी गई शहादत को याद कर आज भी हर दिल ग़म से भर जाता है और हर आंख में आंसू भर आते हैं। हंसने-खेलने वाली छोटी उम्र में उन्होंने जिस दृढ़ संकल्प, निश्चय, निडरता और साहस का परिचय दिया, उसकी मिसाल दुनिया की तवारीख और अदब में और कहीं नहीं मिलती।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों बड़े सुपुत्र-- बाबा अजीत सिंघ जी (उम्र १७ वर्ष) बाबा जुझार सिंघ जी (उम्र १४ वर्ष) मुगल सेना के साथ जूझते हुए चमकौर साहिब के युद्ध में शहीद हुए। तूफ़ानी, भयंकर, अंधेरी रात में सरसा नदी के किनारे बिछुड़कर माता गुजरी जी दोनों छोटे साहिबज़ादों सहित अपने नौकर (रसोइया) गंगू के साथ उसके घर गांव खेड़ी (सहेड़ी) चले गए। यह गांव मोरिंडा रेलवे स्टेशन से दो मील की दूरी पर स्थित है।

माता गुजरी जी के पास कीमती सामान देखकर और ईनाम के लालच में आकर गंगू ने मोरिंडा के कोतवाल को बता दिया। साहिबज़ादों को उनकी दादी जी (माता गुजरी जी) सहित गिरफ़्तार कर बस्सी के थाने में लाया गया और वहां ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया। दिसंबर माह की भयंकर सर्दी के बावजूद साहिबज़ादे अडोल, शांत व सहज रहे, चढ़दी कला में रहे। माता गुजरी जी को आने वाले कठिन समय के बारे में आभास हो चुका था और वे अपने छोटे-छोटे पोतों का हौसला, साहस एवं उत्साह देखकर खुश होती रहीं। साहिबज़ादों ने माता गुजरी जी से कहा :

धंन भाग हमरे है माई।
धरम हेत तन जे कर जाई। (पंथ प्रकाश)

दूसरे दिन साहिबज़ादों को सरहिंद के सूबेदार वज़ीर ख़ान की अदालत में पेश किया गया। उनको डराने की, भयभीत करने की, झुकाने की कोशिश की गई, परंतु न तो वे झुके, न भयभीत हुए। गुरु जी के नन्हें साहिबज़ादों का हौसला व साहस देख वहां उपस्थित सभी लोग दंग रह गए। उनको झुकाने की साज़िश के अंतर्गत कर्मचारियों ने कचहरी का बड़ा दरवाज़ा बंद कर दिया और छोटा खुला रखा था, लेकिन साहिबज़ादों ने पहले अपने पांव आगे बढ़ाए, फिर शीश अंदर ले गए। अंदर जाते ही उन्होंने जोश से *"वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फ़तहि"* का जैकारा गजाया। उनकी बुलंद आवाज़ सुनकर कचहरी के दर-ओ-दीवार कांप उठे। साहिबज़ादों की सूझबूझ उम्र में बड़ों-बड़ों की समझ को मात देने वाली थी। बाबा ज़ोरावर सिंघ जी की आयु लगभग आठ वर्ष और बाबा फ़तहि सिंघ जी की आयु लगभग पांच वर्ष थी।

वज़ीर ख़ान ने साहिबज़ादों को कई लालच दिए और उन्हें अपना धर्म छोड़कर इसलाम

**बी-एक्स ९२५, महल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

स्वीकार करने को कहा। उन्होंने ऐसा करने से दृढ़तापूर्वक मना कर दिया। वज़ीर ख़ान ने फ़तवा देने के बारे में काज़ी से पूछा। काज़ी ने कहा कि इनकी आयु छोटी है और कुरान मजीद में बच्चों को नहीं मारने के बारे में लिखा है, इसलिए इन्हें छोड़ दिया जाए। वज़ीर ख़ान ने साहिबज़ादों से कहा कि "यदि तुम्हें छोड़ दिया जाए तो तुम क्या करोगे?"

बाबा ज़ोरावर सिंघ जी ने कहा, "जाना कहां है . . . जंगलों में जाएंगे . . . सिक्खों को इकट्ठा करेंगे . . . फिर तुम्हारे खिलाफ़ लड़ेंगे।"

सुच्चा नंद ने कहा, "तुम्हें पता है, तुम्हारा पिता (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) मारा गया है!" (भाई संगत सिंघ जी की शहादत से कुछ दिनों तक यही समझा जाता रहा था कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शहीद हो गए हैं।) यह बात सुनकर भी साहिबज़ादे विचलित न हुए।

वज़ीर ख़ान ने दोनों साहिबज़ादों को मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद ख़ान के सुपुर्द करने को कहा और उनसे अपने भाई व भतीजे का बदला लेने को कहा। शेर मोहम्मद ख़ान ने उत्तर दिया कि "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उनकी से दुश्मनी अलग बात है। इन मासूमों पर हाथ उठाना कायरता है, बहादुरी नहीं।" यह थी वो आह, जो मलेरकोटला के नवाब ने भरी थी, किंतु कट्टरवादियों ने नहीं सुनी। सुच्चा नंद ने चापलूसी की हद पार करते हुए वज़ीर ख़ान को भयंकर रूप से उकसाया कि "ये (साहिबज़ादे) सांप के बच्चे हैं। इन्हें अगर बड़ा होने दिया तो ये ज़हरीले सांप बनेंगे।" वज़ीर ख़ान ने काज़ी को ज़ोर देकर कहा कि इनकी मौत का फतवा जारी किया जाए।

काज़ी ने अब नया फ़तवा दिया कि "ये (साहिबज़ादे) दोषी हैं। इन्हें जिंदा दीवार में चिन दिया जाए।"

शहीद होने से पहले वाली रात माता गुजरी जी के लिए गज़ब भरी थी। रात भर दादी मां साहिबज़ादों को गोद में लिए सहलाती रही। माता गुजरी जी उन्हें अपनी आगोश व गोद की गर्माहट में पूरी रात धर्म पर अडिग रहने की साखियां (कथा) सुनाती रही।

समाणा के रहने वाले शाशल बेग तथा बाशल बेग सरकारी जल्लाद थे। उनका मुकद्दमा सरहिंद की अदालत में पेश था। वे अपनी पेशी पर आए हुए थे। साहिबज़ादों को शहीद करने के लिए किसी के द्वारा तैयार न होने पर उन्होंने कहा कि अगर निर्णय उनके पक्ष में सुना दिया जाए तो वे साहिबज़ादों को शहीद कर देंगे। वज़ीर ख़ान ने निर्णय उनके पक्ष में सुनाकर साहिबज़ादे उन जल्लादों को सौंप दिए अर्थात् अपनी एवं सरहिंद की तबाही पर खुद दस्तख़त कर दिए।

मानो आसमान आंसू बहाने लगा हो, धरती कांपने लगी हो। जल्लादों ने दो मासूम, निर्दोष, असहाय बच्चों को नींव में चिनना शुरू कर दिया। धन्य थे साहिबज़ादों के हौसले! वे हंस-हंसकर धर्म-ईमान पर कुर्बान हो रहे थे। उन्हें अपनी सिक्खी पर, अपनी विरासत पर गर्व था। उन्हें अपने महान् दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की कुर्बानी पर गर्व था। उन्हें गर्व था कि वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्र हैं।

वे दृढ़ रहे, अडिग रहे। उन्होंने सब्र और संतोष की सीमा दिखाई; पाक, पवित्र, सच्चे जज़्बे को पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया। वे धर्म के मार्ग से पीछे हटने वाले नहीं थे। जब दीवार उनके सिर से ऊपर पहुंची, तब वे बेहोश हो गए और दीवार गिर गई। दोनों जल्लादों ने साहिबज़ादों का गला रेतकर उन्हें शहीद कर दिया। जब ठंडे बुर्ज में माता गुजरी जी के पास उनकी कुर्बानी की ख़बर पहुंची तो उन्होंने भी

(शेष पृष्ठ १९ पर)

साका सरहिंद : ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता

-डॉ. नयना शर्मा*

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

पंजाब की धरती शूरवीरों की जननी स्वीकार की जाती है। यहां अनेक पीरों-फ़कीरों ने जन्म लिया तथा अपने सत्कर्मों के द्वारा इसे पुण्य-स्थल बना दिया। पुण्य-स्थल पर पुण्यात्माएं विचरण करती हैं। इतिहास साक्षी है कि इस धरती की महक में ऐसा स्रोत है जिसके कारण समय-समय पर यहां त्याग तथा प्रेम निरंतर प्रवाहित होता रहा है। इस मिट्टी में ऐसा बल है कि यहां चाहकर भी कोई दुरात्मा अपना अधिकार नहीं जमा सकती। यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो यहां गुरु-परंपरा के प्रचलन ने एक नवीन दृष्टि दी एवं मानवता के स्थापत्य को एक आधार प्रदान किया। प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी से ही इस आधार का सूत्रपात हुआ। फिर दिशा ग्रहण करता हुआ यह विशाल समुदाय निज प्रभावान्विति से प्रेरित करता हुआ दशम गुरु तक एक सशक्त माध्यम बना।

दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पराक्रम के विषय में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। गुरु जी युगपुरुष के रूप में एक संत तथा सिपाही का दायित्व समानांतर निर्वाह करते रहे। त्याग की प्रतिमूर्ति, मानवता को एक सूत्र में पिरोकर दृढ़ता प्रदान करने वाले तथा वीर-शूरवीर सपूत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गोद में लेकर धरती माता गौरवान्वित अनुभव करती हुई अपने आकार को इतना विशाल अनुभव करती होगी मानो जल, थल तथा आकाश उसकी दीर्घ काया में समाहित हो गए हों। निःसंदेह पंजाब की धरती माता मानवता के दीपक जलाने वाले सपूतों में अग्रगण्य है। इस मिट्टी की महक ने ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरीखे सपूत को एक दृढ़ निश्चयी के रूप में साकार करके कहलवाया :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥ (जफ़रनामा)

यह वीर-परंपरा आद्यंत शौर्य-प्रदर्शन कर मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम रही है। भारत की भूमि पर अनेक ऐसी घटनाएं घटी हैं जो इतिहास प्रसिद्ध हुईं। सबका व्याख्यान तो संभवतः कठिनतर कार्य है, परंतु इस इतिहास में से मार्मिक घटना 'सरहिंद का साका' का वर्णन अग्रलिखित है।

साका सरहिंद इतिहास के हृदय पर एक कठोर प्रस्तर की भांति गढ़ा हुआ व्याख्यान है, जो आततायी पर प्रेम की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, कठोरता पर कोमलता की विजय, स्वार्थ पर परमार्थ की विजय का प्रतीक है। इस घटना की स्मृति ही हृदय-विदारक है।

ऐतिहासिक सूत्र के अनुसार-- "यह एक ठंडी तथा वर्षा की रात्रि थी जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने परिवार और लगभग १५०० सिक्खों सहित श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ा।" *(ए सी. अरोड़ा पंजाब दा इतिहास, पृष्ठ २३३)*

C/o Talwar House, Behind--Bhagat singh Petrol Pump, Near Favarra Chowk, Patiala- 147001

(अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में सिक्खों की गणना के संबंध में मतभेद हैं।) जब गुरु जी सरसा नदी के तट पर पहुंचे तो बाढ़ग्रस्त सरसा मानो अपना विकराल मुख खोले सर्वस्व हड़प जाने को तत्पर थी। ऐसे में पुन: आक्रमणकारियों ने गुरु जी को पराजित करने का अनवरत प्रयास किया, परंतु भक्त कबीर जी की उक्ति-- *"कबीर जिसु मरने ते जग डरै मेरे मनि आनंदु"* के अनुसार गुरु जी अपने शिष्यों के साथ युद्ध का सामना करते हुए भी आनंदित होते रहे। इस युद्ध के परिणामस्वरूप उनकी माता जी तथा छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी अपने परिवार से विच्छुरित हो गए। ऐसे समय में गुरु-घर में रसोइया का कार्यभार संभालने वाला गंगू माता गुजरी जी तथा दोनों वीर सुपुत्रों को गांव सहेड़ी (नज़दीक मोरिंडा) में अपने घर ले गया। स्वार्थ तथा लालच के वशीभूत होकर वह मोरिंडा के कोतवाल को आगंतुकों का समाचार दे आया। तत्पश्चात् साहिबज़ादा बाबा ज़ोरावर सिंघ जी, साहिबज़ादा बाबा फ़तहि सिंघ जी तथा माता गुजरी जी को सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान के समक्ष पेश किया गया। दिसंबर, १७०४ ई में यह घटना घटी थी। तीनों को सरहिंद किले में एक बुर्ज, जिसे 'ठंडा बुर्ज' कहा जाता था, में नज़रबंद कर दिया गया। रात्रि के प्रहर में बाबा मोती राम जी ने ठंडे बुर्ज में प्रवेश करके माता गुजरी जी तथा दोनों साहिबज़ादों को दूध पिलाया। घटना में इतिहास उनका ऋणी हो गया।

सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान ने दोनों साहिबज़ादों को कचहरी में प्रस्तुत करने की आज्ञा दी। दीवान सुच्चा नंद के नेतृत्व में सिपाही ठंडा बुर्ज में पहुंचे। अब समय दादी मां व नन्हे पोतों के एक ऐसे वियोग का था जो इतिहास को मर्मभेदी चीत्कार की गुंजार से भरने जा रहा था। इस तथ्य का वर्णन मर्मान्तिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए योगी अल्ला यार खान लाकबी उर्दू की नज़्म शहीदानि-वफा में लिखते हैं :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं।
कोशों को कंघी कर दूं ज़रा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्ही सी कलगी सज़ा तो लूं।
मरने से पहले तुम को दूल्हा बना तो लूं।

इस कारुणिक दृश्य-वर्णन के पश्चात दोनों गुरु-पुत्रों को सूबेदार के सामने प्रस्तुत किया गया। दोनों अत्यंत दृढ़ता के साथ वहां जाकर फ़तहि बुलाने लगे-- *"वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फ़तहि।"* सत्य को मूर्तिमान देखकर सूबेदार विस्मित हो गया, परंतु फिर स्वयं को संयत करते हुए बोला कि साहिबज़ादों को शाही ठाठ-बाठ प्रदान किया जाएगा यदि वे इसलाम धर्म स्वीकार कर लें। दोनों साहिबज़ादे अपने सिदक में अडोल रहे। उन्होंने कहा :

हमरे बंस रीति इमि आई।
सीस देति पर धरम ना जाई।

सूबेदार साहिबज़ादों की निडरता को देखकर दंग रह गया। उसने दोनों मासूम साहिबज़ादों को जान से मारने की धमकी दी। दोनों साहिबज़ादे पुन: उसी निश्चय से भरकर, आतंक से मुक्त, किसी अज्ञात विश्वास से भरपूर खड़े रहे। सूबेदार ने उन्हें अगले दिन फिर कचहरी में प्रस्तुत करने की आज्ञा दी। रात्रि के समय जेल के अधिकारियों को विशेष हिदायत दी गई कि बलात् मुसलिम धर्म स्वीकार करने का प्रत्येक ढंग प्रयोग किया जाए। अगले दिन पुन: दोनों गुरु-पुत्रों को कचहरी में प्रस्तुत किया गया। पुन: वही आत्मविश्वास देखकर सूबेदार चकित रह गया। दोनों साहिबज़ादे सत्य की प्रतिमूर्ति अपनी निष्ठा में यथास्थान खड़े रहे।

सूबेदार ने क्रोधित होकर उनका 'दोष' स्थापित करते हुए काज़ी से सज़ा निश्चित करने को कहा। उस समय मलेरकोटला का नवाब शेर मुहम्मद ख़ान भी कचहरी में विद्यमान था। दीवान सुच्चा नंद ने नवाब शेर मोहम्मद ख़ान को स्मरण करवाया कि उनका भाई भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों युद्ध में मारा गया था, अत: वो इन गुरु-पुत्रों से अपने भाई की मौत का बदला ले ले। दीवान सुच्चा नंद नवाब शेर मुहम्मद ख़ान को भी अपना पक्षधर बनाना चाहता था। नवाब शेर मुहम्मद ख़ान ने पिता के 'दोष' के लिए बच्चों को 'दोषी' नहीं माना। अत्यंत क्रूर सूबेदार वज़ीर ख़ान ने मनमाने ढंग से काज़ी से फैसला करवाया कि निरीह बालकों को ज़िंदा दीवार में दफन कर दिया जाए। प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्ज़ ब्राऊन इस सम्बंध में लिखता है-- "नए धार्मिक आदर्शों का प्रचार करने वालों पर किए गए अत्याचारों की सभी उदाहरणों में से यह (साका सरहिंद) सर्वाधिक कठोर उपद्रव तथा निर्दय अत्याचार है।"

नवाब मलेरकोटला ने इस निर्णय के संबंध में खंडन प्रस्तुत करते हुए इसे खारिज करने का सुझाव दिया परंतु दुर्भाग्यवश ऐसा न हो सका। नवाब मलेरकोटला कचहरी से उठकर चला गया। इस घटना को 'हाअ का नारा' के नाम से जाना जाता है।

तत्पश्चात् दोनों साहिबज़ादों का मासूम ज़िंदगी से दूर किसी अज्ञात सत्ता की गोद में जाने का समय आ गया। सारे देश में त्राहि का समय था। प्रत्येक की जिह्वा पर इस अत्याचार का विरोध था। उन मासूम पाक फरिश्तों ने तो मानो मृत्यु की गोद में खेलने का निर्णय स्वयं लिया था। बहुत निर्भीक होकर वे उस ओर बढ़ चले, जो स्थान उनकी अंतिम क्रीड़ा के लिए निश्चित किया गया था।

स. कुइर सिंघ ने 'गुरबिलास पातशाही १०' में इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है :

दे कर दूख बहुत अधिकाए।
तब नीहों में बाल चिनाए।
बहुत कलेस तुरक तब दीना।
मुख से नाह उचारन कीना। (पृष्ठ २१४)

ईश्वर की इच्छा का अनुसरण करते हुए दोनों साहिबज़ादे किस अंदाज से जा रहे थे, इस दुर्दांत घटना का वर्णन योगी अल्ला यार खां ने 'शहीदानि-वफ़ा' में इस प्रकार किया है :

हाथों में हाथ डाल के दोनों वह नौनिहाल।
कहते हुए ज़बां से बढ़े सति श्री अकाल।
चेहरे पे गम का नाम न था और न था मलाल।
जा ठहरे सर पे मौत के, फिर भी ना था ख़याल।
हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का है पौधा लगा चले।

इस प्रकार यह घटना पंजाब के, भारत के हृदय पर ही नहीं, विश्व के हृदय पर करुणा की जननी बनकर लिखी गई। इस ऐतिहासिक घटना के प्रभावस्वरूप पंजाब में नई क्रांति का जन्म हुआ। यह क्रांति थी नवीन चेतना की। नवीन चेतना के पंजाब की धरती पर पांव पसारते ही मुगलों का मूल उखड़ने लगा। यह घटना उस आधार-भूमि का काम करती है जिस पर देश की आधुनिक स्वतंत्रता ने अपना अधिकार जमाया। आधुनिक संदर्भ में भी साका सरहिंद प्रासंगिक है।

शासक वर्ग सदा जन-सामान्य पर अपने ही ढंग से शासन करता आया है। दूसरी ओर सभी मुगलों या मुसलमानों को अत्याचारी कह देना कहीं भी युक्तिसंगत नहीं है, क्योंकि

अत्याचार की योजना तो मात्र हकूमत करने वाले क्रूर शासक ही बनाते रहे हैं। यह घटना मानवता के अधिकार क्षेत्र में रहने वालों के लिए सदा त्रासदी बनी रहेगी। न जाने कितने ही हृदय उस समय इस ऐतिहासिक घटना पर कांपे होंगे। आज भी इस घटना को सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। मानवता जगत् में ऐसे ही कष्ट सहती रहेगी, शायद इस बात पर प्रश्न-चिन्ह लगाने की आवश्यकता है।

भले किसी भी भांति सही, परंतु आज असंख्य कदम पुन: भक्तिवाद की ओर झुक रहे हैं। यह कदाचित् पाप की गठरी का भरना भी हो सकता है। 'साका सरहिंद' जैसी ऐतिहासिक घटनाएं मानव को करुणा के पथ पर अग्रसर होने के लिए बाध्य करती रहेंगी; मानवोचित भावनाएं भरने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

मानवता को जागृत कर जन-जन के हृदय में करुणा की लहर को स्थापित करने वाले निरीह साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी अपने गुरु-पिता के गुणों का अनुसरण करते हुए मानवता की नींव में ऐसा बीजारोपित कर गए जिसका फल हम आधुनिक युग में चख रहे हैं। मानवता के पुनरुत्थान के लिए आज के युग में किए जाने वाले प्रयास की भूमिका के रूप में इतिहास की विधियां मार्गदर्शक बनकर हमारा पथ प्रदर्शित करती हुई अंधकार से उजाले तक ले जाने का सोपान हैं। इतिहास में घटी इन घटनाओं से प्रेरणा लेकर सत्योमुखी होकर धर्म के प्रति निष्ठा का मार्ग चुनते हुए सही तथा गलत के प्रति नीर-क्षीर-विवेक रखकर आज हम उस दिशा की ओर चलें जो मानवता की दिशा है; उन बलिदानों को सार्थकता प्रदान करें जो जन-जन के लिए कल्याणकारी हैं, तभी इन सपूतों को सही अर्थ में श्रद्धांजलि दी जा सकती है :

जगत् आलोकित करने आए,
वीर सपूत दशम पिता के।
बलिदान को शतशत नमन् है,
महकें फूल सदा चिता के।
जन-जन में भर कर श्रद्धा,
वे प्रेम का नीर बहाने आए।
सिंचित करने मानवता जग में,
होकर शहीद वे सबको हंसाने आए।

(साभार : 'पंजाब सौरभ'-- दिसंबर, २००९)

शहीदी-वृत्तांत : छोटे साहिबज़ादे तथा माता गुजरी जी *(पृष्ठ १५ का शेष)*

उसी समय अपने प्राण त्याग दिए। वे भी कुर्बान हो गईं। ऐसी हृदयविदारक, मार्मिक घटना के बारे में विश्व साहित्य व इतिहास में अन्यत्र पढ़ने-सुनने को नहीं मिलता।

बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फ़तहि सिंघ जी की शहादत ने पहले से मज़बूत सिक्खी की नींव को और अधिक मज़बूत कर दिया। उनकी पवित्र मृत देहों का ज़ौहरी टोडर मल ने काफ़ी धन खर्च कर अंतिम संस्कार किया।

उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माछीवाड़ा के जंगल में थे। जब उन्हें छोटे साहिबज़ादों एवं माता गुजरी जी की शहादत का समाचार अपने एक गुप्तचर द्वारा मिला तो गुरु जी ने दूब के पौधे को तीर की नोक से उखाड़कर फ़रमाया, "मुगल राज्य समझो अब जड़ से उखड़ गया।"

साहिबज़ादों के जीवन से, उनकी शहादत से प्रेरणा लेकर आज के बच्चों को धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए और अपना जीवन सफ़ल बनाना चाहिए। भौतिक सुख-सुविधाओं के मोह में फंसकर कोई भी गलत काम नहीं करना चाहिए।

गुरु का बंदा : बाबा बंदा सिंघ बहादर

-डॉ. जसविंदर कौर*

सिक्ख इतिहास में बाबा बंदा सिंघ बहादर का नाम सुनहरी अक्षरों में अंकित है। उनके साहस और सिक्ख धर्म के प्रति श्रद्धा के कारण उनका नाम सदा अमर रहेगा। उनके द्वारा प्रशस्त किए मार्ग पर चलकर अंतत: सिक्ख राज्य की स्थापना हुई। उन्होंने मुगलों के विरुद्ध ऐसा संघर्ष आरंभ किया जो प्रथम सिक्ख राज्य के रूप में हमारे समक्ष आया। उनके जाने के बाद भी सिक्खों ने यह संघर्ष जारी रखा जिसका इतिहास साक्षी है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का जन्म कश्मीर की पुंछ रियासत में अक्तूबर १६७० ई में हुआ। इनके बचपन का नाम लछमण देव था। इनके पिता जी का नाम रामदेव था जो कृषि का कार्य करते थे। आपके पिता जी ने आपको बचपन से ही शस्त्र-विद्या, घुड़सवारी तथा शिकार आदि की शिक्षा दी। आप बचपन से ही बहुत फुर्तीले तथा बलवान थे पर साथ ही कोमल हृदय वाले, आध्यात्मिक जिज्ञासु तथा दृढ़ निश्चयी भी थे। एक दिन शिकार करते समय इनके द्वारा एक गर्भवती हिरणी घायल हो गई, जिसके पेट में दो बच्चे थे। उन बच्चों को तड़प-तड़पकर मरते देखकर आपका हृदय द्रवित हो गया और आपने शस्त्रों का त्याग कर जानकी दास नामक साधु का संग कर लिया। १६ वर्ष की आयु में आप घर का त्याग कर रामथंमन चले गए। १६८६ ई में वैरागियों के इस डेरे के प्रमुख महंत हरीदास और उनके शिष्य रामदास के साथ आपका संपर्क हुआ और आपने रामदास को अपना गुरु स्वीकार लिया। अब आपका नाम माधोदास हो गया।

कुछ साधु-संतों ने दक्षिण की ओर भ्रमण का विचार बनाया तो माधोदास भी उनके साथ चल पड़े। पंचवटी पहुंचकर माधोदास ने वहीं रहकर तप करने का निश्चय कर लिया। माना जाता है कि उन्होंने यहां काफी लंबा समय तपस्या की एवं वहां रहते योगी औघड़ नाथ की भी बहुत सेवा की। योगी ने परलोक गमन से पूर्व यंत्र-मंत्र, योग-विद्या व संबंधित साहित्य माधोदास को सौंप दिया।

माधोदास ने कुछ समय बाद पंचवटी से प्रस्थान कर गोदावरी के तट पर नांदेड़ नामक स्थान पर जा ठिकाना किया। यहां उन्होंने एक मठ की स्थापना की तथा काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। अनेकों श्रद्धालु उनकी चर्चा को सुनना अपना सौभाग्य समझते थे। जादू-टोनों की कला में प्रवीण होने के कारण लोग उन्हें चमत्कारी मानने लग पड़े। इन सब कारणों से माधोदास में अहंकार घर कर गया। ऐसे ही समय में माधोदास तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मुलाकात हुई।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कुछ समय बादशाह बहादुर शाह के साथ रहे। उन्हें यह विश्वास था कि बादशाह अपना वायदा पूरा करेगा तथा सरहिंद के गवर्नर को पंजाब के लोगों पर किए अत्याचारों और साहिबज़ादा

*१४७, कबीर पार्क, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।

ज़ोरावर सिंघ तथा साहिबज़ादा फ़तहि सिंघ एवं माता गुजरी जी को शहीद करने के जुर्म में सज़ा देगा, पर जब बहादुर शाह ने राजगद्दी मिल जाने के बाद भी अपना वायदा नहीं निभाया तो नांदेड़ पहुंचकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ बादशाह से अलग हो गए। वे नांदेड़ में ही टिक गए। माधोदास के बारे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को महंत जैतराम से पहले ही पता चल चुका था। वहीं ३ सितंबर, १७०८ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भेंट माधोदास से हुई।

अहमदशाह बटालवी तारीखे-हिंद (१८१७ ई.) में नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा माधोदास की मुलाकात का वर्णन करता हुआ लिखता है :

माधोदास : (महाराज) आप कौन हैं?

गुरु साहिब : वह जिसको तू जानता है।

माधोदास : मैं क्या जानता हूं?

गुरु साहिब : तू अपने मन में अच्छी तरह सोच।

माधोदास : (सोचकर) आप गुरु गोबिंद सिंघ हो?

गुरु साहिब : हां।

माधोदास : आप यहां क्यों पधारे हो?

गुरु साहिब : मैं इसलिए यहां आया हूं कि तुझे अपना सिंघ सजाऊं।

माधोदास : मैं हाज़िर हूं। हजूर! मैं आपका बंदा हूं।

गुरु साहिब ने माधोदास को अमृत-पान करवाया और वे इतिहास में बाबा बंदा सिंघ बहादर के नाम से ही प्रसिद्ध हुए।

उनके जीवन संबंधी संक्षिप्त जानकारी के बाद अब हम सिक्ख इतिहास में बाबा बंदा सिंघ बहादर के योगदान के बारे में संक्षिप्त जानकारी देंगे।

अक्तूबर, १७०८ ई को ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को खालसे का जत्थेदार बनाकर पांच तीर, निशान साहिब, एक नगाड़ा व पांच प्रमुख सिक्ख तथा बीस अन्य सिक्खों सहित हुकमनामे देकर (जो पंजाब के सिक्खों के लिए थे) पंजाब की ओर मुगलों से टक्कर लेने के लिए भेजा।

कुछ ही समय में अपने साथियों समेत बाबा बंदा सिंघ बहादर दिल्ली की सीमा के पास खरखौदा तक पहुंच गए। सेहरी तथा खंडा गांवों के पास उन्होंने अपना ठिकाना किया। उनके पास धन और सेना दोनों की कमी थी। उन्होंने पंजाब के सिक्खों को गुरु साहिब के हुकमनामे और एक-एक पत्र अपनी ओर से भी भेजा जिसमें गुरु साहिबान, साहिबज़ादों तथा अन्य सिक्खों की कुर्बानियों के साथ-साथ वजीर खां तथा सुच्चा नंद जैसे लोगों के अत्याचारों को समाप्त करने में उनकी सहायता करने व उनके पास पहुंचने की अपील की थी। बहुत सारे सिक्ख वहां पहुंचने आरंभ हो गए। एक दिन लुटेरों का एक गिरोह वहां आ पहुंचा। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने लुटेरों को गांव लूट लेने दिया, मगर जब लुटेरे लूट का माल लेकर भागने लगे तो बाबा जी ने सारा माल उनसे झपट लिया। लुटेरे अपनी जान बचाकर भागे। बाबा बंदा सिंघ ने सारा समान गांव के चौराहे पर ला ढेर किया। गांव निवासी अपना-अपना सामान पहचानकर ले गए। इस घटना ने सब ग्राम निवासियों तथा बाबा जी के साथियों में जोश भर दिया। इस घटना के बाद जो लोग बाबा जी का साथ देने से घबराते थे वे भी बाबा जी के साथ हो गए। लगभग ५०० सिक्ख जल्द ही बाबा जी के पास पहुंच गए। मालवे

के प्रमुख सिक्ख भाई धरम सिंघ व भाई परम सिंघ जो भाई रूपा गांव के थे, भाई भगतू के भाई फ़तहि सिंघ, सलोदी वाले भाई आली सिंघ तथा भाई माली सिंघ घोड़ों और शस्त्रों सहित बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास पहुंचे। कुछ ही समय में यह सेना चार हज़ार तक पहुंच गई। इस गिनती में दिन-ब-दिन वृद्धि होती गई। पंजाब पहुंचने से पहले बाबा बंदा सिंघ बहादर ने हरियाणा के कई स्थानों पर भी ठिकाना किया।

नवंबर, १७०९ को बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अपने सैनिकों सहित सोनीपत के सरकारी खज़ाने पर धावा बोल दिया। सोनीपत से वे सरहिंद की ओर रवाना हुए। कैथल के समीप शाही खज़ाने को उन्होंने अपने अधिकार में ले लिया जो दिल्ली जा रहा था, पर उसमें से उन्होंने कुछ भी अपने पास न रखा व सारा कुछ सेना में बांट दिया।

२६ नवंबर, १७०९ को बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अपने साथियों सहित समाणा पर धावा बोल दिया तथा सफलता प्राप्त की। यह सिक्खों की पहली विजय थी। समाणा श्री गुरु तेग बहादर जी को शहीद करने वाले जल्लाद जलालुदीन का पुश्तैनी गांव था। इस युद्ध में लगभग १० हज़ार लोग मारे गए तथा सरकारी खज़ाने से भी बहुत सारा माल बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथियों के हाथ लगा। समाणा से घुड़ाम, शाहबाद, मुस्तफाबाद होता हुआ बाबा बंदा सिंघ बहादर का दल कपूरी पहुंचा। कपूरी का कदमुद्दीन नामक फौजदार बहुत अय्याश किस्म का व्यक्ति था। वह गैर-मुस्लिमों के लिए आतंक बना हुआ था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने कपूरी पर हमला कर महलों को आग लगा दी तथा वहां एकत्रित धन सेना व लोगों में बांट दिया।

कपूरी से बाबा बंदा सिंघ बहादर सढौरा पहुंचे, जहां उसमान खां हाकिम था। वह बड़ा ही अत्याचारी था। वह हिंदुओं को मृतक देह भी जलाने नहीं देता था। सैयद बदरुद्दीन यहीं के रहने वाले थे जिन्होंने भंगाणी के युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सहायता की थी, जिस कारण उसमान खां ने उन्हें मौत के घाट उतरवा दिया था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने उसमान खां का खात्मा कर दिया। जीत के बाद उन्होंने अपने थानेदार व तहसीलदार-ए-माल नियुक्त किए। सढौरा से बाबा जी बनूड़ की ओर चल दिए। बनूड़ पर विजय प्राप्त कर मई, १७१० में बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सरहिंद की ओर प्रस्थान किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का मुख्य ध्येय सरहिंद के सूबेदार वजीर खां को सज़ा देना था, जिसने साहिबज़ादों को शहीद किया था। सिक्खों में इस बात का बहुत रोष था। जिस किसी सिक्ख को भी इस बारे में जानकारी मिली वही बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास पहुंचने को उतावला था और धर्म-युद्ध में भाग लेने का इच्छुक भी। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने चुनिंदा सिक्खों को युद्ध के ढंग-तरीके समझाकर अलग-अलग टुकड़ियां तैयार कर दीं और स्वयं ऊंची जगह मोर्चा बनाकर दुश्मन की फौज की तैयारी का जायज़ा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की फौज के बहुत-से सैनिक अशिक्षित थे और उनके पास ज्यादा अस्त्र-शस्त्र भी नहीं थे और न ही अच्छे हाथी-घोड़े थे। उनके पास तो भाले, कृपाणें, धनुष और बाण ही थे। समकालीन इतिहासकार खाफी ख़ान के अनुसार उनके सैनिकों की गिनती अवश्य ३०-४० हज़ार तक थी।

वजीर खां ने बाबा बंदा सिंघ बहादर के खिलाफ जिहाद का एलान कर दिया। मलेरकोटले

के नवाब, मुस्लिम जागीरदार और रंघड़ भारी मात्रा में वजीर खां की सहायता के लिए आ डटे। वजीर खां के ज्यादातर सैनिक प्रशिक्षित थे। उनकी अपनी सेना में छ: हज़ार घुड़सवार, आठ से नौ हज़ार बरकंदाज, तीरंदाज़ और अनेकों हाथी थे। उसके पास तोपखाना भी था और अन्य अस्त्र-शस्त्र भी। वह स्वयं सबके मध्य हाथी पर सज़ा था। सिंघों ने शाही फौज को तोपचियों के बारूद भरने से पहले ही जा दबोचा। बाबा जी की फौज ने तीरों और तलवारों से ही शाही फौज के छक्के छुड़ा दिए। बाबा बंदा सिंघ बहादर के स्वयं मैदान में होने के कारण सिंघों के हौसले बुलंद थे। वजीर खां के सहायक मलेरकोटलिए मुहम्मद खां व ख्वाजा अली खां को जान से हाथ गंवाने पड़े व उनकी सेना मैदान छोड़कर भाग गई। यह युद्ध सरहिंद से २० किलोमीटर दूर चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर हुआ था। भाई फ़तहि सिंघ की कृपाण ने वजीर खां का सिर धड़ से अलग कर दिया। यह १२ मई, १७१० का दिन था।

वजीर खां की मृत्यु के बाद सिंघ सरहिंद में जा घुसे। १४ मई को सरहिंद पर सिंघों का पूर्ण कब्जा था। अब बाबा बंदा सिंघ बहादर यमुना-सतलुज के बीच के क्षेत्र के मालिक थे। सरहिंद के २८ परगने थे जो सतलुज से यमुना तथा शिवालिक की पहाड़ियों से कुंजपुरा तक फैले थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर को ३६ लाख रुपये सालाना आमदन भी होने लगी तथा सिंघों ने खालसा राज्य का झंडा भी वहां फहरा दिया। बाबा बाज़ सिंघ को वहां का सूबेदार नियुक्त किया जो नांदेड़ से ही बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ आए थे। बाबा आली सिंघ को नायब सूबेदार बनाया गया। भाई फ़तहि सिंघ को समाणा का सूबेदार स्थापित किया गया तथा भाई राम सिंघ व भाई बिनोद सिंघ को थानेसर व उससे संबंधित इलाके सौंपे गए।

ध्यान देने योग्य है कि इस युद्ध में बाबा बंदा सिंघ बहादर ने किसी धर्म-स्थल को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। बहुत सारे हिंदू-मुसलमान लोगों ने स्वेच्छा से सिक्ख धर्म ग्रहण कर लिया। कई मुस्लिम भी सिक्ख सेना में भर्ती हुए। उन्हें अपने धर्म के कार्य-व्यवहार करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। जमींदारी-प्रथा का भी अंत कर दिया गया। अब जो किसान खेती करता था वही भूमि का मालिक था।

प्राचीन हस्तलिखितों के आधार पर विलियम इर्विन अपनी पुस्तक 'लेटर मुगलज़' में लिखता है कि सिक्खों के अधिकार में आए परगनों में देर से चली आ रही पुरानी रस्मों को बिलकुल ही उलटा कर दिया गया था। एक तथाकथित नीच जाति के महतर या चमार, जिसे हिंदू बहुत नीच समझते थे, को सिर्फ घर छोड़कर गुरु की शरण में आ जाने व सिक्ख धर्म में शामिल होने पर इलाके का हाकिम बनाकर वापस भेज दिया जाता था। जब वह अपने इलाके की सीमा में प्रवेश करता था तो बड़े-बड़े अमीर और अच्छे घरानों में पैदा हुए कुलीन उसका स्वागत करने के लिए हाथ जोड़कर उसका हुक्म ग्रहण करना चाहते थे। किसी का यह हौसला नहीं होता था कि उसकी आज्ञा का पालन न करे। वे लोग जो मैदाने-जंग में खालसा फौज का मुकाबला करने के लिए तैयार रहते थे, इतने भयभीत हो गये थे कि जुबान खोलने से भी डरने लगे थे।

अनेक स्थानों पर विजय प्राप्त करने के बाद शासन-व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के साथ-साथ बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिक्ख समाज के विस्तार का कार्य भी जारी रखा। इस समय तक काफी इलाका सिंघों के हाथ आ चुका

था। अब बाबा बंदा सिंघ बहादर के मन में राजधानी बनाने की बात आई। उन्होंने मुखलिसगढ़ को अपनी राजधानी बनाने का निर्णय लिया। यह स्थान सढौरा व नाहन के मध्य पहाड़ी क्षेत्र है। यहां एक किला भी था। उस किले की मुरम्मत करवा कर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने उसका नाम लोहगढ़ रखा तथा यहीं से सारे राज्य-प्रबंध को चलाने लगे। यहां बड़ी सेना और युद्ध की सामग्री रखी जाने लगी। यहीं से बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिक्ख राज्य का सिक्का व मुहर चलाई।

सिक्के पर फारसी भाषा में जो लिखा था उसका अर्थ था : "इस सारी धन-संपत्ति का दाता गुरु नानक है, प्रभु-कृपा से जीत दिलाने वाले गुरु गोबिंद सिंघ हैं।" मुहर पर जो लिखा था उसका अर्थ था : "गरीब लोगों के लिए देग तथा कमज़ोरों की रक्षा के लिए तेग और हर तरह की जीत तथा कामयाबी सदा कायम रहे जो गुरु नानक तथा गुरु गोबिंद सिंघ से प्राप्त हुई है।"

इन दिनों सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादर को बहुत चाहने लगे और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बहुत बड़ी देन समझने लगे। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा चलाए गए सिक्के और मुहरें इस बात का प्रमाण हैं कि गुरु नानक साहिब तथा गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति बाबा बंदा सिंघ बहादर के मन में कितनी अपार श्रद्धा थी। सिक्ख धर्म के आदर्शों के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादर ने ईमानदार लोगों को सरदारियों की बख़्शिश दी। बाबा बंदा सिंघ बहादर की सेना का कोई भी अधिकारी जब अपने गांव जाता तो लोग उसका सत्कार करते।

मुगल हाकिमों पर विजय पाने के इरादे से बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सहारनपुर पर हमला कर दिया। अली हामद खां मैदान छोड़कर ही भाग गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की सेना यमुना-गंगा-दोआबा के क्षेत्र में काफी समय सक्रिय रही। इसके बाद बाबा जी अपनी सेना सहित पंजाब की ओर मुड़े। वे मलेरकोटले भी गए और अपने पुराने साथी किशन दास के कहने पर दो लाख रुपये लेकर मोरिंडा की ओर चल दिए। मोरिंडा के फौजदार ने गुरु गोबिंद सिंघ जी के माता जी और छोटे साहिबज़ादों को वजीर खां को सौंपा था। वहां विजय प्राप्त कर वे अनंदपुर साहिब व कीरतपुर साहिब श्रद्धा-सुमन भेंट करने गए। उन्होंने होशियारपुर पर भी अधिपत्य स्थापित कर लिया।

फिर ब्यास पार कर माझे के सिक्ख अपने इलाके में पहुंच गए। बटाले पर कब्जा किया व डेरा बाबा नानक के दर्शनों के लिए गए। फिर अमृतसर आकर गुरु-घर में बहुत सारी भेंट चढ़ाई और युवकों को सिक्ख बनने के लिए प्रेरित किया। माझे के बहुत सारे लोग उनसे प्रोत्साहन लेकर सिक्ख बने। अमृतसर में उन्होंने गुरमता भी किया। कलानौर पर विजय प्राप्त करने के बाद उनकी सेना लाहौर की सीमा तक पहुंच गई। लाहौर के बाहरी हिस्से में सिक्ख फौज ने जबरदस्त आक्रमण किया। माझे और रियाड़की का बहुत सारा इलाका सिक्खों के कब्जे में आ गया।

अपने साथियों की विजय से प्रभावित सिक्खों ने मुगल अफसरों को जलंधर से भगा कर अपने लोगों को उच्च पदों पर नियुक्त कर दिया। अपनी सफलताओं से सिक्खों के हौसले बुलंद हो चुके थे। दोआबे के सिक्खों ने शमस खां को संदेश भेजा कि या तो वह अपने प्रबंध में सुधार करे अथवा उनकी अधीनगी स्वीकार कर ले, पर शमस खां बहुत बड़ी सेना लेकर

सिक्खों का मुकाबला करने निकल पड़ा। सिक्ख राहों के किले में जा घुसे। शमस खां की सेना ने कई दिन तक किले को घेरे रखा। अंदर से किए आक्रमण से बाहरी सेना का भागना नामुमकिन देख सिक्खों ने रात को बाहर आकर धावा बोल दिया। अक्तूबर, १७१० ई. में घेरा तोड़कर वे बाहर निकल गए पर जल्द ही शमस खां की फौज को भारी नुकसान पहुंचा कर सिक्खों ने किले पर पुनः कब्जा कर लिया। अब पठानकोट से कर्नाल तक सिक्खों का ही अधिपत्य था। मालकम लिखता है कि अगर और कुछ दिन बादशाह बहादुर शाह दक्षिण में रहता तो सारे उत्तरी भारत पर सिक्खों का कब्जा होता।

जब सिक्खों की बढ़ती शक्ति का पता बादशाह बहादुर शाह को लगा तो उसने बहुत सारे फौजदार व गवर्नरों को इकट्ठा करके बाबा बंदा सिंघ बहादर के खिलाफ कार्यवाही करने को कहा। बादशाह के पंजाब पहुंचने से पूर्व ही फ़िरोज खां मेवाती, सुलतान कुली खां, शकर खां की फौजें सिक्खों के अधीन आ चुके स्थानों पर पुनः कब्जा करने के लिए सक्रिय हो गईं। बाबा बंदा सिंघ बहादर का राज्य चाहे थोड़ी देर ही पंजाब में रहा पर इसने पंजाब के इतिहास पर बहुत गहरी छाप छोड़ी। वास्तव में बाबा बंदा सिंघ बहादर के बढ़ते प्रभाव से बादशाह बौखला गया था। उसने गुरु नानक साहिब के सिक्खों को देखते ही मार देने का फरमान जारी कर दिया था।

कई स्थानों से सिक्खों को खदेड़ दिया गया। सिक्ख लोहगढ़ के किले में जा एकत्र हुए। शाही फौज ने ध्यान रखा कि बाहर से खाने-पीने की कोई भी चीज़ अंदर न जा पाए। सिक्ख रात को शाही सेना पर आक्रमण करते। सिक्ख डटकर लड़े पर जब काफी दिन भूखे-प्यासे रहना पड़ा तो उन्होंने किले से निकल कर शाही सेना पर जबरदस्त हमला करने का निर्णय ले लिया। गुलाब सिंघ नामक एक सैनिक की शक्ल बाबा जी से मिलती थी। दिसंबर, १७१० की एक रात को बाबा बंदा सिंघ बहादर अपने कुछ साथियों सहित किले से बाहर नाहन की ओर चले गए। यहां से उन्होंने सिक्खों को आदेश जारी किए और उन्हें कीरतपुर साहिब पहुंचने को कहा।

यहां बाबा बंदा सिंघ बहादर ने शिवालिक की पहाड़ियों को खोद कर गुफाएं बनाईं, जिनका प्रयोग फौज के लिए किले के रूप में किया गया। बहुत सारे सिक्ख उन्हें यहां मिले।

बाबा बंदा सिंघ बहादर को हाथ से निकल जाने से बादशाह बौखला गया और जो पिंजरा उसने बाबा बंदा सिंघ बहादर को बंद करने के लिए बनवाया था उसमें नाहन के राजा भूप प्रकाश तथा बख़्शी गुलाब सिंघ को बंद कर दिल्ली भेज दिया गया। बादशाह स्वयं भी लाहौर चला गया, जहां १७१२ ई को उसका देहांत हो गया। इसके बाद काफी समय राज्य में गड़बड़ी मची रही। बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके सैनिकों को भी कुछ दिन फ़ुर्सत के मिल गए और उन्होंने अपने संगठन को मज़बूत करने व शक्ति-वर्धन में समय लगाया। उन्होंने पहाड़ी राज्यों को अपना गढ़ बना लिया। एक बार फिर सिक्खों ने अपनी खोई रियासतें प्राप्त करने का यत्न किया तथा सढौरा और लोहगढ़ पर पुनः अधिपत्य स्थापित कर लिया।

फरुख्सियर १७१३ ई में दिल्ली का बादशाह बना और उसने सिक्खों पर सख़्ती करने के आदेश दिए। जून, १७१३ को शाही सेना ने बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा सिक्ख सैनिकों को

लोहगढ़ में जा घेरा, परंतु बाबा बंदा सिंघ बहादर घेरा तोड़कर निकलने में सफल रहे तथा बटाला और कलानौर जा पहुंचे। वहां उन्होंने गुरदास नंगल के किले में जा ठिकाना बनाया जो गुरदासपुर से ६ किलोमीटर दूरी पर है। शाही सेना ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को ४०००० सैनिकों के साथ घेर लिया गया। ८ महीने तक सिक्ख मुगल सैनिकों का सामना करते रहे। युद्ध-नीति को ध्यान में रखते हुए भाई बिनोद सिंघ किले से बाहर चले गए और बाबा बंदा सिंघ बहादर अपने शेष साथियों सहित डटे रहे। नवंबर, १७१५ के अंत तक बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके साथियों के पास खाद्य-पदार्थों और असले की कमी हो गई। सैनिक धीरे-धीरे मात्र पिंजर बन गए। खाफी खां लिखता है कि पहले वे घास खाते थे, फिर पेड़ों की पत्तियां और छाल खाने लगे। वे जानवरों की हड्डियां पीस कर आटा बनाते थे। कुछ लोगों को अपनी जांघों का मास काटकर, भून कर खाना पड़ा। लोग हैजा आदि बीमारियों से भी मर रहे थे।

दिसंबर, १७१५ को मुगल कमांडर अबदुसमद खां ने एलान किया कि यदि सिंघ किले का दरवाजा खोल दें तो उसके आदमी किसी को नहीं मारेंगे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने किले का दरवाजा खोल दिया। मुगल सेना सिक्खों पर झपट पड़ी। ३०० के लगभग सिक्ख मार दिए गए और ७०० के लगभग बंदी बना लिए गए। बाबा बंदा सिंघ बहादर को बेड़ियों में जकड़ लिया गया और पिंजरे में डाल दिया गया। मुगलों को अभी भी भय था कि बाबा बंदा सिंघ बहादर उनके चंगुल से निकल न जाए, इसलिए पिंजरे के चारों ओर शस्त्रधारी सैनिकों का पहरा लगा दिया गया। पिंजरा हाथी पर रखा गया और बाबा बंदा सिंघ बहादर को दिल्ली ले जाने से पूर्व लाहौर की गलियों में घुमाया गया। लाहौर के गवर्नर के पुत्र जकरिया ख़ान ने अपनी सेना को आदेश दिया कि दिल्ली जाते समय सिक्खों का कत्लेआम किया जाए।

जब मुगलों का जत्था सिक्खों को लेकर दिल्ली पहुंचा तो फरुख्सियर के आदेशों को मानते हुए उसका मंत्री मुहम्मद आमीन ख़ान उन्हें लेने पहुंचा था। १७१६ ई के फरवरी माह के अंत में बाबा बंदा सिंघ बहादर दिल्ली पहुंचे। उस समय दिल्ली निवासियों ने जो कुछ देखा वह दिल दहला देने वाला था। सबसे आगे शाही सेना के २०० सैनिक चल रहे थे, जिनके नेजों की नोकों पर सिक्खों के सिर टंगे हुए थे। उसके बाद वह हाथी था जिस पर बाबा बंदा सिंघ का पिंजरा था। मुस्लिम गार्ड नंगी तलवारों से उस पर पहरा दे रहे थे। उनके पीछे ऊंटों पर कैदी थे जिनके मुंह काले किए हुए थे। उनके पीछे मुगल कमांडर मुहम्मद अमीन ख़ान, उसका पुत्र कमरुद्दीन ख़ान और उसका दामाद जकरिया ख़ान थे।

साधारण कैदियों को प्रतिदिन १०० की गिनती में शहीद किया जाता। उनके धड़ों को गाड़ियों में लादकर शहर के बाहर जंगली जानवरों के खाने के लिए फेंक दिया जाता तथा उनके सिर वृक्षों पर लटका दिए जाते। यह प्रक्रिया सात दिन तक चलती रही।

उसके बाद २० प्रमुख सिक्खों, जिनमें भाई बाज़ सिंघ, भाई फ़तहि सिंघ, भाई आली सिंघ, भाई गुलाब सिंघ आदि थे, को यातनाएं दी गईं और पूछा गया कि खज़ाना कहां छुपा रखा है। जब कोई उत्तर न मिला तो ९ जून, १७१६ को उन्हें भी शहीद कर दिया गया।

इसी दिन बाबा बंदा सिंघ बहादर की

शहादत से पूर्व उनको पिंजरे में डाल हाथी पर रखा गया और उनके चार साल के पुत्र को उनकी गोदी में बिठाया गया। उन्हें दिल्ली की गलियों में से घुमाते हुए कुतुबमीनार के पास ले जाया गया। वहां ख्वाजा कुतुबद्दीन बख़्तियार काकी की दरगाह पर मेला लगा हुआ था इसलिए भीड़ काफी थी। उन्हें भीड़ में घुमाया गया। फिर उनका पिंजरा धरती पर रखा गया और छोटी तलवार देकर उन्हें अपने ४ साल के पुत्र को मारने को कहा गया। फिर एक मुगल सैनिक ने उसके पुत्र को मारकर उसका मास बाबा बंदा सिंघ के मुंह पर मारा व उसका कलेजा बाबा बंदा सिंघ बहादर के मुंह में डाला। बाबा बंदा सिंघ बहादर निश्चल बैठे रहे।

मुहम्मद अमीन ख़ान ने बाबा बंदा सिंघ बहादर से पूछा कि "अब तक के तुम्हारे व्यवहार से तुम सद्‌गुणी, प्रभु में विश्वास करने वाले, शुभ कार्य करने वाले और बुद्धिमान लगते हो। क्या तुम यह बता सकते हो कि तुम्हें यह सब कष्ट क्यों झेलने पड़ रहे हैं?" बाबा बंदा सिंघ बहादर ने कहा कि "जब अत्याचारी लोग आज जनता पर अत्याचार करते हैं तो प्रभु मेरे जैसे लोगों को उन्हें सज़ा देने के लिए भेजता है। अत्याचारियों को मलियामेट करते हुए खुद भी कष्ट उठाने पड़ते हैं, यहां तक कि जान भी देनी पड़ सकती है।"

बाबा बंदा सिंघ बहादर के इस जवाब को सुनकर ज़ालिमों द्वारा पहले बाबा बंदा सिंघ बहादर की दाईं आंख निकाली गई फिर बाईं। उसके बाद उनका दाहिना पैर काटा गया। फिर उनके दोनों हाथ शरीर से अलग किए गए, लाल गर्म लोहे के चिमटों से उनका मास नोचा गया। फिर उनका सिर काटकर बाकी शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सारे कष्ट शांत रहकर सहन किए और प्रभु से यही विनती करते रहे कि "प्रभु यह कभी न हो कि मैं इस कठिन परीक्षा में असफल हो जाऊं।"

इस तरह हम देखते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो जिम्मेवारी बाबा बंदा सिंघ बहादर को सौंपी थी उसे उन्होंने अपने प्राण देकर भी पूरा किया। उनके बाद बाबा दीप सिंघ, नवाब कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. चढ़त सिंघ शुकरचक्किया ने उनके मिशन को बाखूबी निभाया। मिसलों को एकत्र कर महाराजा रणजीत सिंघ ने लाहौर को अपने कब्जे में कर लिया और पंजाब में सिक्ख राज्य की पुन: स्थापना हुई। इस सिक्ख राज्य की नींव में बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके साथियों का जो खून समाया हुआ था उसे भूल पाना किसी भी भारतीय के लिए असंभव है। उन्होंने जो कहा वो कर दिखाया। सचमुच, उन्होंने 'गुरु का बंदा' बनकर दिखाया, जिन्हें सिक्ख इतिहास सदा याद रखेगा। 



भक्त सैण जी

*–स. जसविंदर सिंघ खांबरा**

मध्यकालीन युग में भक्तों के रहन-सहन और उनके द्वारा रचित बाणी ने लोक-मनों पर विशेष प्रभाव डाला। भक्त रामानंद जी, भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त रविदास जी आदि ने अत्याचारों से टूट चुकी जनता तथा बिखर चुके सामाजिक जीवन-मूल्यों को जोड़ा और आत्मिक बल प्रदान करके प्रभु से जुड़ने का रास्ता दिखाया। जाति, रंग, रूप, नसल के भेद से ऊपर उठकर परमात्मा में विश्वास पैदा करने के लिए प्रेरित किया। इन क्रांतिकारी भक्तों की मंडली में भक्त सैण जी भी सम्मिलित हैं। भक्त सैण जी समकालीन भक्तों व लोगों में हरदिल अज़ीज़ थे। श्री गुरु अरजन देव जी महाराज श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ४८७ पर अपनी बाणी में इनका सत्कार करते हुए लिखते हैं :

सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥

गुरु जी ने भक्त सैण जी को मुख्य भक्तों की शृंखला में शामिल किया है। भक्त सैण जी का जन्म गांव सोहल ठट्ठी, नज़दीक झबाल, ज़िला तरनतारन में श्री मुकंद राय के घर में हुआ। (कई विद्वान भक्त सैण जी का जन्म-स्थान बांधवगढ़, रीवा (मध्य प्रदेश) मानते हैं।) आप जी के दादा जी को 'गोल्हन' कहा जाता था। आज भी इनके खानदान को इसी नाम से पुकारा जाता है। इसके बारे में कौलू ब्राह्मण ने 'सैन सागर' ग्रंथ के पृष्ठ ११ पर अंकित किया है :

गोलन का पौता भैया मुकंद राय सुत जान।
लीनी कुल ऊधार सैन रूप धर नाम।१०।

आप जी की माता का नाम जीवणी देवी और भूआ का नाम शोभी था। १२ वर्ष की आयु में आपको आपकी भूआ शोभी के पास लाहौर भेज दिया गया। लाहौर में उस्ताद अज़ीम से जिराह कार्य की सिखलाई प्राप्त की। सिखलाई के समय शाहदरे का नाई जलू आपके उस्ताद के पास आया। भक्त सैण जी उनके हृदय में रम गए। भक्त सैण जी के ननिहाल व दादके के बारे में पूछकर भूआ शोभी की उपस्थिति में उनकी सगाई हुई। एक वर्ष के बाद आपकी शादी बीबी साहिब देवी से हो गई। भक्त सैण जी की तरह बीबी साहिब देवी भी आए हुए श्रद्धालुओं की टहल-सेवा करती। आपके घर में एक पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम नई रखा गया। नई भी सेवा-भावना वाले त्यागी पुरुष थे। इस तरह भक्त सैण जी का पूरा परिवार चंदन की वाटिका की भांति महक बांटने लगा। इस चंदन की वाटिका की महक दूर-दूर तक फैलने लगी। संत-भक्त इनके प्यार में खिंचे हुए इनके पास चले आते।

उन्हीं दिनों पंजाब में भयानक अकाल पड़ गया। लोग भूखे-प्यासे तड़प-तड़पकर मरने लगे। पंजाब से हिजरत जारी हो गई। भक्त सैण जी परिवार समेत दिल्ली को रवाना हो गए। नौकरी की खोज में आपको राजा का

**संपादक, सैन खोज पत्रिका, नकोदर रोड, खांबरा, ज़िला जलंधर-१४४०२६*

दीवान सोहन लाल मिल गया। भक्त जी ने उसकी नाखून उतारकर सेवा की। दीवान को भक्त जी में विशेष आकर्षण दिखाई दिया। वो भक्त सैण जी को राजा जयदेव के पास ले गया। आप राजा की टहल-सेवा में लग गए।

यह राजा कौन था, इसके बारे में मतभेद पाए जाते हैं। प्रो. निरभै सिंघ अपनी संपादित पुस्तक 'श्री सैनि जीवन रचनावली' के पृष्ठ ३ पर 'दो शब्द' के अंतर्गत लिखते हैं कि एक कथन के अनुसार भक्त सैण जी रीवा रियासत के करम सिंह देव के पुत्र राजा बीर सिंह बघेला के पास नौकर थे। महान कोश के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा तथा मैकालिफ़ ने बांधवगढ़ (रीवा) का राजा राजाराम सिंह लिखा है।

भक्त जी ने राजा की सेवा तन-मन से आरंभ कर दी। राजा को आत्मिक व शारीरिक सुख प्राप्त हुआ। राजा की लिव भक्त सैण जी से जुड़ गई। वह अब भक्त सैण जी के बिना नहीं रह सकता था। भक्त सैण जी राजा की सेवा के साथ-साथ हमेशा प्रभु-भक्ति में लीन रहते। भक्त सैण जी की सेवा-भक्ति प्रभु को भी भा गई।

भक्त सैण जी राजा का जीवन सफल करते हुए काशी की तरफ चले गए। काशी भक्त-जनों का प्रमुख निवास-स्थान था। वहां भक्त रामानंद जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त रविदास जी, भक्त धंना जी रह रहे थे। वे भक्त सैण जी के साथी बन गए। सतसंग व भजन-कीर्तन होता, प्रभु-सिमरन की धारा बहती। 'सैन सागर' में इस बात का संकेत है कि संत-मंडली ने द्वारिका, अयोध्या, गया तथा महाराष्ट्र के कई तीर्थ-स्थलों पर जाकर कीर्तन का प्रवाह चलाया। अनेक प्राणियों को प्रभु के साथ जोड़ते हुए भक्त सैण जी काशी में परलोक गमन कर गए। अंतिम समय में इनके पास भक्त त्रिलोचन जी, भक्त नामदेव जी, भक्त सधना जी, भक्त सूरदास जी, भक्त रविदास जी भी थे। 'सैन सागर' ग्रंथ में आपके परलोक गमन का ज़िक्र किया गया :

संमत चौदह सौ नभवां जोती जोत रली पूरण होए काम।
राम नाम गुर पाहीए हरि सैने भजु नाम।
धंना ते रविदास जी त्रिलोचन सधना जानु।
नामदेव और सूरदास कीर्तन किया जापनी चारे धाम।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ५९५ पर राग धनासरी के अंतर्गत भक्त सैण जी का जो सलोक अंकित किया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आप भक्त रामानंद जी के शिष्य थे। यह सलोक 'सैन सागर' ग्रंथ में दो बार अंकित किया गया है। पहले पृष्ठ १० और बाद में पृष्ठ २८९ पर। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार :

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमलापती ॥
मंगला हरि मंगला
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥ रहाउ ॥
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥

'सैन सागर' ग्रंथ की असल प्रति भाई इकबाल सिंघ, अकालगढ़ ढपई, ज़िला श्री अमृतसर के पास मौजूद है। इसकी फोटो कापी जन्म-स्थान गुरुद्वारा सैण भगत जी, सोहल ठट्ठी, ज़िला

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा में प्राण न्यौछावर करने वाले शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

श्री हरिमंदर साहिब सिक्खों का केंद्रीय आध्यात्मिक स्थल है। यह सिक्खों की श्रद्धा, आन-बान-शान और स्वाभिमान का भी प्रतीक है। १८वीं शताब्दी में सिक्खों का सारा संघर्ष दलित-शोषित मानवता की रक्षा के लिए था। मानवता के शत्रुओं को लगता था कि सिक्ख अपनी सारी शक्ति श्री हरिमंदर साहिब और अमृत सरोवर से प्राप्त करते हैं। वे समझते थे कि अमृत सरोवर का जल छककर ही सिक्ख इतने बहादुर, दिलेर, दृढ़ निश्चय वाले बन जाते हैं।

इसलिए मानवता के शत्रुओं के मन में यह ख़्याल घर कर गया कि यदि इस स्थान को ही नष्ट कर दिया जाए तो सिक्खों की मानसिक शक्ति ख़त्म हो जाएगी और उन्हें आसानी से समाप्त किया जा सकेगा। इस उद्देश्य को सामने रखकर तत्कालीन आक्रमणकारी मुगलों, तुर्कों, अफ़गानों आदि ने कई बार श्री हरिमंदर साहिब एवं अमृत सरोवर को अपवित्र करने और ढह-ढेरी करने की कोशिश की। हर बार गुरु के लाडले सिंघों ने अपने गौरव के प्रतीक इस स्थान की रक्षा की और सजा-संवार कर पुन: निर्मित कर लिया।

सबसे पहले जकरिया ख़ान सूबेदार लाहौर ने दीपावली के अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब में एकत्र होने वाले सिक्खों को एक साथ घेर कर ख़त्म कर देने की योजना बनाई, परंतु भाई मनी सिंघ जी की बुद्धिमता के कारण जकरिया ख़ान का यह षड्यंत्र बुरी तरह विफल हो गया। फलस्वरूप सन् १७३० ई में भाई मनी सिंघ जी को बंद-बंद काटकर शहीद कर दिया गया।

इसके बाद सन् १७४५ ई में जंडियाला (ज़िला श्री अमृतसर) के फौज़दार मस्से रंघड़ ने श्री हरिमंदर साहिब में जाकर पलंग बिछाकर शराब पी और वेश्याएं नचाकर इस पवित्र स्थान की घोर बेअदबी की। तब भाई सुक्खा सिंघ और भाई महिताब सिंघ ने बीकानेर से आकर सरेआम मस्से का सिर काटा और बरछे पर टांगकर वापस ले गये। इस तरह दुष्ट मस्से रंघड़ को उसकी करनी का फल दिया।

सन् १७५२ ई में लाहौर के दीवान लखपत राय ने श्री हरिमंदर साहिब पर कब्ज़ा करके अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। दल खालसा ने शीघ्र ही श्री अमृतसर शहर को पुन: प्राप्त करके अमृत सरोवर की कार-सेवा करवा ली। १७५२-५३ ई में ही मीर मन्नू ने सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया, परंतु सिक्खों ने दीपावली आते-आते फिर से सरोवर की सफाई कर ली।

इसी तरह सन् १७५७ ई में अहमदशाह अब्दाली का भारत में से लूटा हुआ माल सिंघों द्वारा छीन लेने पर अब्दाली का सिपहसालार ज़हान ख़ान फौज लेकर श्री अमृतसर पर आ हमलावर हुआ। श्री अमृतसर की रक्षा करते हुए बाबा दीप सिंघ जी शहीद हो गये। ज़हान ख़ान ने शहर को जीतकर अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। सिक्ख भी कहां चैन से बैठने वाले थे! गुरु के लाडलों ने उसी साल श्री

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

अमृतसर शहर को फिर से जीतकर सरोवर की कार-सेवा कर ली।

श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए अपनी जान वारने वाले सिक्खों की फेहरिस्त बहुत लंबी है। शहीदों की इसी परंपरा में एक नाम शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी का भी है। अहमदशाह अब्दाली के सन् १७६४ ई में हुए हमले के दौरान बाबा गुरबख़्श सिंघ जी ने अपने सिर्फ तीस साथियों के साथ अब्दाली की छत्तीस हज़ार फौज का मुकाबला किया और अनगिनत वैरियों को मौत के घाट उतारते हुए अपने साथियों के साथ शहीदी प्राप्त की।

जन्म एवं जीवन : बाबा गुरबख़्श सिंघ जी श्री अमृतसर ज़िले के खेमकरण नगर के निकट स्थित गांव लील के रहने वाले थे। आपका जन्म संभवत: १७०५-१० ई के आस-पास यहीं हुआ था। आपने युवा होकर भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका और पूर्ण सिंघ सज गए। आप पक्के रहितवान और बलशाली थे। पहर भर रात रहते उठते, गुरबाणी पढ़ते और दृढ़तापूर्वक सिक्खी के सिद्धांतों का पालन करते। बाबा जी स्वच्छ सफेद रंग का बाणा (चोला एवं कछहिरा) धारण करते। सिक्ख आप को सम्मानपूर्वक 'निहंग जी' कहकर पुकारते। आप जहां कहीं भी युद्ध होने की ख़बर सुनते, नगाड़े बजाते हुए वहां पहुंच जाते। बाद में आप ने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के रूप में भी पंथ की सेवा की।

अब्दाली का हमला : नवंबर-दिसंबर, सन् १७६४ ई में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर सातवां हमला किया। इस समय ज्यादातर सिक्ख जत्थेदार पंजाब से बाहर अलग-अलग मुहिमों पर गए हुए थे। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया दिल्ली में थे। केवल सरदार चढ़त सिंघ सियालकोट में थे। जब उन्हें अब्दाली के लाहौर पहुंचने की ख़बर मिली तो उन्होंने तुरंत पहुंचकर अब्दाली के खेमों पर जबदस्त हल्ला बोल दिया। इस अचानक हमले ने अब्दाली के लश्कर को भारी नुकसान पहुंचाया। एक सफल हमले के बाद सरदार चढ़त सिंघ अगले हमले की तैयारी करने के लिए अपने जत्थे के साथ जंगलों में लुप्त हो गए।

अब्दाली का श्री अमृतसर पर आक्रमण : इस अचानक हमले से भन्नाया अब्दाली श्री अमृतसर की ओर बढ़ा। उसने आते ही श्री हरिमंदर साहिब को घेर लिया। इस समय श्री हरिमंदर साहिब में बाबा गुरबख़्श सिंघ जी समेत सिर्फ तीस सिक्ख थे। हमले की ख़बर सुनते ही बाबा जी ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा की तैयारी शुरू कर दी। सभी सिक्खों ने अस्त्र-शस्त्र सजा लिए। अनंदु साहिब की छ: पउड़ियों का पाठ किया, अरदासा सोधा, श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेका और जंग करने के लिए तैयार-बर-तैयार हो गये।

बाबा जी की शहादत : इतने में अब्दाली की फौज श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में घुस आई। बाबा गुरबख़्श सिंघ जी और उनके साथी सिक्खों ने दुश्मन सेना का डटकर मुकाबला शुरू कर दिया। सिक्ख सैनिक मुगल हमलावरों को दर्शनी ड्योढ़ी पर पांव तक नहीं रखने दे रहे थे। जो आगे बढ़ता वो सिरी साहिब की भेंट चढ़ जाता।

दुश्मन के पास तीर और बंदूक जैसे दूर से मार करने वाले हथियार थे और इधर बिना कवच-ढाल के सिर्फ़ चोले धारण किये हुए मुट्ठी भर सिक्ख। फिर भी दर्शनी ड्योढ़ी पर भयानक युद्ध हुआ। महज तलवारों और बरछों से बाबा गुरबख़्श सिंघ जी और उनके साथी सिंघों ने अनगिनत शत्रुओं को मौत की नींद सुला दिया।

सिर्फ तीस सिक्ख कब तक हज़ारों के

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

शहीद भाई रण सिंघ मादपुरी

*-सिमरजीत सिंघ**

ज़िला लुधियाना की तहसील समराला में दोराहा-समराला सड़क पर दोराहा से ११ किलोमीटर की दूरी पर गांव मादपुर है। इस गांव में बेनीपाल भाईचारे के लोग बसते हैं। यह बिनेपाल की वंश में से हैं। राजा जग्गदेउ परमार ने २१वीं सदी से भट्टनेर से आकर महमूद गज़नवी के पोत्र को पराजित कर दरिया सतलुज के क्षेत्र लुधियाना पर कब्ज़ा कर लिया था। इस लड़ाई में बेनीपाल भाईचारे के लोग भी राजा जग्गदेउ की सहायता के लिए आए थे। यह खन्ना के पास ईसड़ू के इर्द-गिर्द आबाद हो गए। इनको गंढू भी कहा जाता है। गांव मादपुर के निवासियों ने अंग्रेजों से भारत को आज़ाद करवाने के लिए तथा देश-सेवा में बढ़-चढ़कर योगदान डाला। इस गांव के निवासी स. सुद्ध सिंघ के सुपुत्र भाई अरजन सिंघ ने जैतो के मोर्चे में भाग लेकर एक वर्ष की कैद काटी; भाई शेर सिंघ, जत्थेदार रतन सिंघ तथा स. हरनाम सिंघ ने अंग्रेजों की धक्केशाही का विरोध करते हुए जेल काटी। यहां के निवासी भाई सुंदर सिंघ के सुपुत्र भाई शेर सिंघ फौजी ने जैतो के मोर्चे के समय जेल काटी। भाई गुरदियाल सिंघ के सुपुत्र स. तारा सिंघ, भाई हजूरा सिंघ के सुपुत्र स. रण सिंघ तथा स. पाला सिंघ के सुपुत्र स. वजीर सिंघ ने भाई फेरू जी के मोर्चे में कैद काटी तथा २००-२०० रुपए जुर्माना अदा किया। कैप्टन अमरजीत सिंघ ने १९६२ ई. में चीन की फौजों का मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त की। इसी गांव के फौजी स. पहाड़ा सिंघ ने १९६५ ई. में हिंद-पाक जंग में दुश्मनों के साथ जूझते हुए शहीदी प्राप्त की। इसी गांव के निवासी भाई रण सिंघ निहंग जी ने अंग्रेजों की धक्केशाही का विरोध करते हुए अमानवीय यातनायें झेलते हुए शहादत प्राप्त की।

गांव मादपुर में भाई भोला सिंघ जी अपनी पत्नी बीबी अतर कौर जी के साथ रहते थे। इनके घर दो पुत्रों-- स. जैमल सिंघ व स. रण सिंघ ने जन्म लिया। स. रण सिंघ का जन्म १८८३ ई. में हुआ। यह परिवार पिता पुरखी गुरमति प्रचार तथा नाम-बाणी का अभ्यासी था। इस गांव के अगल-बगल के गांवों में सिंघ सभा द्वारा सुधार लहर का प्रचार चलता रहता था। स. रण सिंघ अपने पिता जी के साथ अकसर इन समागमों में भाग लेते रहते। आपने गांव की ही धर्मशाला के उदासी साधू बावा शाम दास जी से गुरमुखी पढ़ना सीखकर गुरबाणी का पाठ-अध्ययन करना शुरू कर दिया। आप कीर्तन के भी बड़े प्रेमी थे। आप गुरमति प्रचार के साथ-साथ अपने पिता जी के साथ खेतीबाड़ी के काम में भी हाथ बंटाने लग गए थे। सिंघ सभा लहर के प्रभावाधीन आप खंडे की पाहुल प्राप्त करके तैयार-बर-तैयार सिंघ सजकर बाणी तथा बाणे के पक्के धारक बन गए। आप जी का अनंद कारज गुरसिक्ख परिवार की बीबी प्रसंन कौर जी के साथ नाभा रियासत के गांव बलाणे में हुआ। इनके घर दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों ने जन्म लिया। आप जी ने पंथक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना शुरू

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

कर दिया। आप जी के बारे में मशहूर है कि एक बार अकाली जत्था समराला ने फैसला किया कि प्रत्येक तहसील का जत्थेदार कम से कम २००-२०० रुपए इकट्ठा कर जमा करवाए। आप जी अपने इलाके के जत्थेदार थे, इसलिए आप जी ने कर्ज़ा लेकर २०० रुपए जमा करवा दिए। यह कर्जा उतारने के लिए इनको बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

नाभापति महाराजा हीरा सिंघ तथा रानी जसमेर कौर के घर राजकुमार रिपुदमन सिंघ का जन्म हीरा महल में ४ मार्च, १८८३ ई को हुआ था। राजकुमार का पालन-पोषण बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया। इनकी शिक्षा प्राप्ति की जिम्मेदारी लाला बिशन दास तथा भाई कान्ह सिंघ के सपुर्द की गयी थी। इसके अलावा बाबा अतर सिंघ जी मसतूआणा वाले भी आप जी को ज्ञान से भरपूर करते रहते थे। राजकुमार रिपुदमन सिंघ का अनंद कारज १९०१ ई में स. गुरदिआल सिंघ (मान) की पुत्री बीबी जगदीश कौर के साथ हुआ। सन् १९०६ ई में इनको २ वर्ष के लिए गवर्नर जनरल की लैजिस्लेटिव कौंसिल का सदस्य बनाया गया। इस दौरान आपने अनंद मैरिज बिल पास करवाने के लिए तैयार करवाया। कौंसिल में आपने सदा ही अपनी कौम तथा देश के हक में आवाज़ बुलंद की। इनके घर ८ अक्तूबर, १९०८ ई को पुत्री बीबी अमर कौर जी ने जन्म लिया।

२५ दिसंबर, १९११ ई को महाराजा हीरा सिंघ का देहांत हो गया। इस समय राजकुमार रिपुदमन सिंघ फ्रांस में था। देश वापिस आने पर २४ जनवरी, १९१२ ई को इनको राज्य-सिंहासन पर बिठाने के लिए ताजपोशी की गयी। इस रस्म को आपने सिक्ख मर्यादा के अनुसार किया तथा किसी भी अंग्रेज अधिकारी को नहीं बुलाया। अंग्रेज सरकार ने इसका भारी रोष किया। सन् १९१४ ई में जब अंग्रेज सरकार ने इनसे जंग के लिए फौज मांगी तो इन्होंने फौज देने से इंकार कर दिया। अंग्रेज सरकार के राजनीतिक भगौड़े भी नाभा रियासत में आकर पनाह लेते थे। महाराजा नाभा द्वारा प्रिंस ऑफ वेल्ज़ का सम्मान न करने आदि के कारण अंग्रेजों द्वारा अंदाज़ा लगाया गया कि महाराजा रिपुदमन सिंघ बागी रुचि रखता है। अंग्रेज सरकार ने यह भी प्रस्ताव पारित कर दिया कि जिस राजे या रियासत के मालिक की मृत्यु बिना किसी पुत्र के होगी, उस रियासत का सारा प्रबंध अंग्रेज सरकार के अधीन आ जाएगा। महाराजा रिपुदमन सिंघ ने सन् १९१८ ई में मेजर प्रेम सिंघ (गरेवाल) रायपुरिया की पुत्री बीबी सिरोजनी देवी के साथ दूसरी शादी कर ली जिससे इनके घर २२ सितंबर, १९१९ ई को पुत्र टिक्का प्रताप सिंघ का जन्म हुआ। अंग्रेज सरकार को महाराजा की गदरियों के साथ हमदर्दी की रिपोर्टें पहुंचनी शुरू हो गयीं। सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा ननकाणा साहिब के साके के समय भी महाराजा रिपुदमन सिंघ का विशेष योगदान रहा। ननकाणा साहिब के साके के रोष के रूप में काली पगड़ी बांधकर सरकारी स्तर पर मातम भी मनाया।

पटियाला व नाभा रियासत का आपसी झगड़ा हो गया। अंग्रेजों को अपना बदला लेने का मौका मिल गया। सन् १९२२ ई में हाईकोर्ट के एक जज से जांच करवाई गयी। अंग्रेजों की शह पर जज ने रिपोर्ट में महाराजा को दोषी करार दे दिया। जुलाई, १९२३ ई में महाराजा को नाभे की गद्दी छोड़कर गुज़ारा पेंशन लेने के लिए मज़बूर किया। इस कार्यवाही के लिए महाराजा से जबरदस्ती हस्ताक्षर भी करवा लिए तथा तीन लाख वार्षिक पेंशन देकर तुरंत कार

में बिठाकर देहरादून भेज दिया। उनको किसी से बात करने या मिलने का मौका भी न दिया गया। रियासत के प्रबंध के लिए अंग्रेज प्रबंधक उगलवी की नियुक्ति कर दी गयी तथा कुछ समय इनकी जगह पर विल्सन को नियुक्त कर दिया गया। महाराजा को गद्दी से उतारने के कारण सिक्ख जगत में बहुत गुस्सा तथा रोष फैल गया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अंग्रेजों की धक्केशाही के विरुद्ध तथा महाराजा के हक में आवाज़ बुलंद की गयी। जगह-जगह पर जलसे तथा जलूस निकाले गए। अंग्रेज सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल के लगभग ६० सदस्य १३-१४ अक्तूबर, १९२३ ई को गिरफ्तार कर लिए गए।

जैतो के स्थानीय निवासियों ने इकट्ठा होकर १४ सितंबर, १९२३ ई. को गुरुद्वारा श्री गंगसर जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ किए। सरकार ने पुलिस भेजकर श्री अखंड पाठ साहिब कर रहे ग्रंथी साहिब को जबरन गिरफ्तार कर लिया तथा गुरुद्वारा साहिब में किसी के भी प्रवेश पर पाबंधी लगा दी गयी। इससे श्री अखंड पाठ साहिब खंडित हो गया। अंग्रेज सरकार की इस धक्केशाही के विरुद्ध लोगों में भारी गुस्सा भर गया और सिक्खों ने इस धक्केशाही के विरुद्ध मोर्चा लगा लिया। इस मोर्चे का उद्देश्य था कि जैतो जाकर श्री अखंड पाठ साहिब फिर से आरंभ किया जाए। २५ सितंबर, १९२३ ई. से हर रोज़ श्री अकाल तख़्त साहिब से २५-२५ सिंघों का जत्था जाना शुरू हो गया। इन सिंघों को पुलिस पकड़कर राजस्थान के दूरस्थ जंगलों में छोड़ देती। फिर ५००-५०० सिंघों के जत्थे जाने शुरू हो गए। ५०० सिंघों का पहला जत्था ९ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर से रवाना हुआ। जब यह जत्था गुरुद्वारा टिब्बी साहिब जैतो के पास पहुंचा तो अंग्रेज अफसर विल्सन जॉनसन् ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। परिणामतः बहुत सारे प्रदर्शनकारी गोलियों से भून दिए गए, बहुत सारे ज़ख्मी हो गए। गोलीबारी के बाद भी पुलिस कर्मचारियों ने घोड़ियों पर सवार होकर ज़ख्मियों पर लाठियों से हमला कर दिया। ज़ख्मियों की सहायता के लिए किसी डॉक्टर को भी पुलिस ने पास न जाने दिया।

भाई रण सिंघ जी ने भी अपने परिवार सहित श्री अमृतसर जाकर शहीदी जत्थों में जाने के लिए अपने परिवार का नाम दर्ज करवाने की विनती की। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने इनका जज़्बा देखकर नाम जत्थे में शामिल कर लिया, परंतु परिवार को वापिस गांव भेज दिया। आप जी ने चौथे शहीदी जत्थे में जाना था।

दूसरा शहीदी जत्था २८ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अमृतसर से जैतो के लिए रवाना हुआ। तीसरा जत्था २२ मार्च, १९२४ को जैतो के लिए रवाना हुआ। चौथे जत्थे में भाई रण सिंघ जी भी शामिल थे। यह जत्था जब लुधियाना पहुंचा तो ओरिएंटल भुजंगण आश्रम जसपालों के मैनेजर, जो भाई रण सिंघ के मित्र थे, आप जी से मिलने के लिए आए। इनको मिलने के कारण अंग्रेज सरकार ने इन पर भी हुक्म की उल्लंघना करने का मुकद्दमा दायर कर दिया जो बहुत देर बाद रफा-दफा हुआ। चार नंबर शहीदी जत्था १८ अप्रैल, १९२४ ई. को जैतो पहुंच गया। जैतो पहुंचने पर जत्थे में शामिल सभी सिंघों को गिरफ्तार करके नाभा जेल भेज दिया गया। इसके बाद जेल में आने वाले जत्थों की गिनती में काफी बढ़ोतरी होने लगी। जेल में कैदियों को रखने की समस्या शुरू हो गयी। नाभा सेंट्रल जेल के साथ बीड़ दुसांझ

तथा बीड़ मैंस में अस्थायी जेलें बनायी गयीं। जेल अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार प्रदर्शनकारियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था।

भाई रण सिंघ जी को भी पहले नाभा जेल के बीड़ दुसांझ वाले कैंप में रखा गया। बाद में इसी कैंप में जत्था नं: ६, ८, ११, १२, १३ तथा १४ के प्रदर्शनकारियों को भी लाकर बंद किया गया। इन कैंपों में कुछ अकाली वर्करों को, जो मुखिया होते थे, नाभा जेल में ले जाकर माफी मांगने के लिए दबाव डाला गया। पुलिस द्वारा भाई रण सिंघ जी पर भी बहुत सख़्तियां करके माफी मांगने के लिए मज़बूर किया गया। भाई साहिब सदा ही प्रभु की रज़ा मानने वाले गुरसिक्ख थे तथा अपने इरादे में दृढ़ रहे और हर प्रकार की यातनायें झेलने के लिए तैयार रहे। भाई साहिब ने पुलिस की ज्यादतियों के विरुद्ध जेल में अनशन कर दिया। जेल में भाई रण सिंघ जी की गतिविधियों को देखते हुए जेल कर्मचारी इनसे ईर्ष्या करने लग गए। इनको बीड़ दुसांझ से नाभा जेल में ले जाया गया।

३ मई, १९२५ ई की शाम को सेंट्रल जेल के जल्लाद उनकी कोठड़ी में आ गए। वे भाई साहिब को पकड़कर यातना गृह में ले गए। जल्लादों ने उनके केशों को छत पर लटकते सांकल से साथ बांध दिया। उनको लकड़ी की कुर्सी पर खड़ा करके पैरों पर भारी पत्थर बांध दिए, जिनका भार उनके शरीर से कई गुना ज्यादा था। भाई साहिब सुखमनी साहिब का पाठ करते हुए यातनायें झेलते रहे। कुछ समय बाद कुर्सी को उनके नीचे से खींच लिया गया। भाई साहिब का शरीर पूरे झटके के साथ नीचे गिर गया, जिससे खोपरी केशों समेत शरीर से अलग हो गयी। कुछ समय बाद वे शहीदी प्राप्त कर गए। पुलिस द्वारा नाभा जेल के अहाते में ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

भाई साहिब के दो पुत्र-- भाई हजूरा सिंघ जी, भाई हरचरन सिंघ जी व दो पुत्रियां-- बीबी गुरदिआल कौर व बीबी सुरजीत कौर थीं। इन दोनों का अनंद कारज ज़िला फ़तहिगढ़ साहिब के गांव बडला में हुआ। भाई हजूरा सिंघ जी ने फेरू के मोर्चे में भाग लेकर कैद काटी। भाई हजूरा सिंघ जी का अनंद कारज ज़िला लुधियाना के गांव राईआं की निवासी बीबी दलीप कौर के साथ हुआ। अभी आप जी की कोई संतान भी नहीं थी कि आप जी अकाल चलाना कर गए। समय की रिवायत के अनुसार बीबी दलीप कौर जी की दूसरी शादी भाई हजूरा सिंघ जी के छोटे भाई हरचरन सिंघ जी के साथ कर दी गयी। भाई हरचरन सिंघ जी गांव मादपुर की पंचायत के सरपंच भी रहे तथा इलाके में अच्छे स्वभाव के कारण पसंद किए जाते रहे। भाई हरचरन सिंघ जी के घर स. शिंगारा सिंघ जी, स. पहाड़ा सिंघ जी तथा स. पंजाब सिंघ जी ने जन्म लिया। स. शिंगारा सिंघ जी की वंश गांव में आबाद है। स. पहाड़ा सिंघ जी फौज में भर्ती हो गए। भाई पंजाब सिंघ जी ने शहीद भाई रण सिंघ जी तथा शहीद भाई पहाड़ा सिंघ जी की यादगार गांव में कायम की तथा सेवा-संभाल कर रहे हैं। भाई पंजाब सिंघ जी का अनंद कारज समराला के पास गांव मल्लमाजरा की निवासी बीबी जसबीर कौर खालसा के साथ हुआ। इनके घर एक पुत्र स. गुरसेवक सिंघ ने जन्म लिया। स. गुरसेवक सिंघ का अनंद कारज ज़िला संगरूर के गांव संगरेड़ी की निवासी बीबी परमजीत कौर के साथ हुआ। इनके घर एक पुत्री बीबी अमनदीप कौर तथा एक पुत्र स. जतिंदर सिंघ का जन्म हुआ। यह आजकल गांव मादपुर में रह रहे हैं। शहीद भाई रण सिंघ जी के बड़े भाई स. जैमल सिंघ ने भी 'गुरु का बाग' के मोर्चे में कैद काटी थी।



कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु

*-श्री धर्मेन्द्र कुमार उर्फ स. जोरावर सिंघ**

'आसा की वार' बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना नंबर ४६२ से ४७५ तक अंकित है। इसमें २४ पउड़ियां तथा ५९ सलोक हैं। इन सलोकों में से ४५ सलोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा तथा १४ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचे गए हैं। वार की समस्त पउड़ियां श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित हैं। बारहवीं पउड़ी के साथ लिखे गए सलोक में एक 'रहाउ' भी आया है :

बलिहारी कुदरति वसिआ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ (पन्ना ४६९)

पहले आसा की वार बाणी पउड़ियों के रूप में ही थी, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार करते समय श्री गुरु अरजन देव जी ने पउड़ियों के समान भावार्थ वाले सलोक भी साथ में अंकित कर दिए। वर्तमान आसा दी वार इसी रूप में है।

आसा की वार में 'कूड़' भिन्न-भिन्न रूपांतरों व पृथक-पृथक पउड़ियों में ४० बार आया है। श्री गुरु नानक देव जी ने उस युग में हर तरफ कूड़ का ही प्रसार माना है :

सरम धरम का डेरा दूरि ॥
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ (पन्ना ४७१)

भाई गुरदास जी ने 'कूड़' शब्द को व्यापक रूप में लेते हुए भिन्न-भिन्न अर्थ किए हैं, जैसे भ्रम तथा अज्ञानता के रूप में, अंधकार के रूप में, कड़ुए स्वाद के रूप में, चोर के रूप में, कच्चा तथा परिवर्तनशील आदि :

मनमुखु कूड़ु कुरंग है फुल कुसुंभै थिर न रहंदा। (वार ३०:६)

भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'कूड़' शब्द का अर्थ-- कूट, असत्य, आभास, झूठ आदि किया है। *(महान कोश, २००६, पृष्ठ ३४६)*। संप्रदायी टीकाकार भाई किरपाल सिंघ के अनुसार राय-भोय की तलवंडी के हाकिम राय बुलार को वैरागमयी उपदेश देने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने आसा दी वार की १०वीं पउड़ी को प्रस्तुत किया है। *(किरपाल सिंघ, १९९१, पृष्ठ ६७०)* यहां संसार की विनाशशीलता को ध्यान में रखते हुए उसे असत्य माना गया है :

जैसा सुपना रैनि का तैसा संसारु ॥(पन्ना ८०८)

स. सुरजीत सिंघ लायलपुरी ने अपनी पुस्तक 'आसा की वार : सच्च दे खजाने' में पृष्ठ १०२ पर 'कूड़' शब्द के बारे में विचार करते हुए लिखा है कि "यह संसार मदारी के तमाशे की तरह है। इस तमाशे में छल है, कपट है और यहां जो कुछ भी दिख रहा है, वह सब विनाशशील है, केवल एक परमात्मा ही स्थाई सत्ता वाला है।"

प्रो. आशानंद वोहरा ने अपनी पुस्तक 'आसा की वार : इक संसक्रित अधिऐन' में लिखा है कि "संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है। संसार की नश्वरता के कारण ही इसे कूड़ कहा गया है। संसार की वास्तविकता में विश्वास रखते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने इसे असत्य कहा है, क्योंकि यह विनाशशील है, क्षणभंगुर है। इसी प्रकार कई अन्य विद्वानों ने भी कूड़ शब्द पर विचार किए हैं।" *(सन् १९७१, पृष्ठ १२०)*

हम देखते हैं कि आसा की वार की दूसरी

**शोधार्थी, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००१, मो: ९५०१७-३३६६०*

पउड़ी के साथ अंकित पहले सलोक में श्री गुरु नानक देव जी ने इस संसार की वास्तविकता का चित्रण किया है और साथ ही सच्चे व कच्चे का अंतर भी स्पष्ट किया है :

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ . . .
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ (पन्ना ४६३)

और इसी पउड़ी के साथ दर्ज तीसरे सलोक में इस संसार को परम सच के निवास स्थान के रूप में चित्रित किया गया है :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
(पन्ना ४६३)

इसके बाद १०वीं पउड़ी के साथ अंकित पहले सलोक में राजा, प्रजा, सांसारिक पदार्थ, दुनियावी रिश्ते और सारे संसार को ही कूड़ कहा गया है :

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
(पन्ना ४६८)

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित इन सलोकों में जहां पहला सलोक संसार को सत्य करके प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरा सलोक इसे असत्य कहकर प्रकट करता है। अब यदि यह संसार सच है तो इसे झूठ नहीं कहा जा सकता है और यदि झूठ है तो सच नहीं कहा जा सकता है। इस प्रकार इन दोनों सलोकों में आपसी विरोधाभास नज़र आता है, पर वास्तव में कोई विरोधाभास नहीं है। यहां सच और कूड़ को समझने के लिए हम निम्नलिखित उदाहरण का सहारा ले सकते हैं :-

एक पेड़ की डाल पर एक चिड़िया बैठी है। एक तीरंदाज़ को उसकी दाहिनी आंख में निशाना लगाना है। इस कार्य में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि तीरंदाज़ को केवल चिड़िया की दाहिनी आंख ही दिखाई पड़े। यदि तीरंदाज चिड़िया के साथ-साथ पेड़ के सारे भागों को और आस-पास की सभी चीजों को भी देख रहा है तो यह निश्चित है कि तीरंदाज़ का निशाना लक्ष्य को बेधने की बजाए इधर-उधर भटक जाएगा। इसका कारण निशाने में एकाग्रता का अभाव है और लक्ष्य को बेधने के लिए एकाग्रता बेहद जरूरी है।

इस उदाहरण में हम देखते हैं कि चिड़िया, पेड़ तथा आस-पास की सभी चीजें वास्तविक हैं, पर चिड़िया की दाहिनी आंख में निशाना लगाने के लिए यहां तीरंदाज़ को यह मानना पड़ता है कि चिड़िया की दाहिनी आंख के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं, यहां तक कि उसे अपने आप को भी भूलना पड़ता है। इस प्रकार यहां केवल लक्ष्य ही वास्तविक रह जाता है।

इसी प्रकार मानव जीवन का एकमात्र लक्ष्य परमात्मा के साथ मिलाप करना है। गुरबाणी में बार-बार उपदेश किया गया है कि हमें जो यह मनुष्य-जन्म प्राप्त हुआ है यह सांसारिक पदार्थों का भंडार एकत्र करने के लिए नहीं है, वरन् प्रियतम से मिलाप का सुअवसर है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ (पन्ना १२)

यदि हमें अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करना है तो हमारे लिए अति आवश्यक है कि हम लक्ष्य की प्राप्ति पर पूरी एकाग्रता के साथ ध्यान दें। हमारी पूर्ण एकाग्रता तभी बन सकती है जब हम संसार में रहते हुए भी सांसारिक वस्तुओं से निर्लेप रहें। यहां निर्लेप रहने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम संसार का त्यागकर गुफाओं में बैठ जाएं। निर्लेप रहने से तात्पर्य यही है कि हम सांसारिक वस्तुओं को अपने जीवन-निर्वाह का साधन-मात्र ही समझें, संसार की वस्तुएं एकत्र करना हमारा लक्ष्य न बन जाए। हमारा लक्ष्य केवल परम सच के

साथ साक्षात्कार करना ही रहे :

कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ (पन्ना ४६८)

यदि हमारा ध्यान दुनियावी पदार्थों को एकत्र करने में ही लगा रहा तो हम अपने वास्तविक लक्ष्य को भूल जाएंगे। श्री गुरु नानक देव जी ने देखा कि मनुष्य के आध्यात्मिक विकास की संभावनाएं आलोप होती जा रही हैं। अधिकांश लोग पदार्थवादी हो गए हैं। लोग दुनियावी पदार्थों में इतना संलिप्त हो चुके हैं कि परमात्मा के नाम पर भी ठगी करते फिरते हैं। मनुष्य अपने जीवन मनोरथ को ही भूल बैठा है। हर तरफ अधर्म का ही बोलबाला है। इंद्रिय-सुख को ही लोगों ने अपना लक्ष्य मान लिया है। गुरु जी ने मनुष्य को उसके परम लक्ष्य की याद दिलाते हुए उपदेश किया है कि जिन पदार्थों के साथ वह इतना मोह कर रहा है वे उसका लक्ष्य नहीं हैं। वह तो संसार में आत्म-साक्षात्कार का लाभ प्राप्त करने के लिए आया है और इसे भूलकर वह अनावश्यक कार्यों में लिप्त हो गया है :

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥ (पन्ना ४३)

संसार की समस्त वस्तुएं परिवर्तनशील हैं, जो प्रतिक्षण बदलती रहती हैं। इन क्षणभंगुर वस्तुओं के साथ प्रेम करके मनुष्य वास्तविक आनंद को प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तविक आनंद ईश्वर के साथ मिलाप द्वारा ही संभव है। जगत की परिवर्तनशीलता को ध्यान में रखकर गुरु जी ने संसार को नाशवान कहा है :

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ (पन्ना ४६८)

इसके अलावा इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि हम इस जगत को जिस रूप में देख रहे हैं वह इसका वास्तविक रूप नहीं है। इसका वास्तविक रूप हमें दृष्टिगोचर नहीं होता, क्योंकि हमारी बुद्धि हउमै के प्रभाव से मलिन हो चुकी है। जब तक हमारी बुद्धि हउमै के प्रभाव से मुक्त होकर निर्मल नहीं हो जाती तब तक हम इस संसार के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ सकते।। बुद्धि की इसी मलिनता को ही भ्रम कहा गया है। भ्रम एक ऐसा आवरण है, जो वास्तविकता को ढंके रहता है। बुद्धिवादी दार्शनिक डेकार्ट कहता है कि ईश्वर सत्यवादी और परम शुभ है। उसने हमें भ्रमातीत शक्ति प्रदान की है, पर यह हमारी तर्कबुद्धि है, जो हमें भ्रम में पड़ने के लिए मज़बूर करती है क्योंकि हमारी बुद्धि पूर्वाग्रहों और मतों से ग्रस्त होती है।

गुरबाणी में भ्रम की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि अज्ञानता से भ्रमित होकर हम इस संसार को वह समझते हैं, जो है नहीं :

माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥
जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ (पन्ना ६५७)

अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को सर्प समझ लेना भ्रम है। भ्रमित हुआ व्यक्ति सत्य को असत्य और असत्य को सत्य समझता है :

खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥
अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥
सूते कउ जागतु कहै जागतु कउ सूता ॥
जीवत कउ मूआ कहै मुए नही रोता ॥ (पन्ना २२९)

इस प्रकार इस समस्त विचार-चर्चा में हम देखते हैं कि चाहे श्री गुरु नानक देव जी ने संसार को वास्तविक माना है और वास्तविक मानकर ही वे सारे कार्य करते रहे हैं, परंतु मानव जीवन के मनोरथ, संसार की परिवर्तनशीलता, मनुष्य की सीमा तथा बौद्धिक भ्रम को ध्यान में रखते हुए गुरु जी ने 'आसा की वार' में इस संसार को 'कूड़' कहा है।



कविता

प्रार्थना-- तुम ही साधो मेरा जीवन!

करूं प्रार्थना तुमसे भगवन!
तुम ही साधो मेरा जीवन!
भूल भूलैया में भटका मन।
कभी चहकता, कभी हो क्रंदन।
तुम ही इसको राह दिखाओ!
मन के तम को तुम्हीं हटाओ!
मन मेरे कुविचार न आवें!
सद्‌विचार ही मन में छावें!
मुख से कड़वे बोल न फिसलें!
प्रेम भरे हित-वचन ही निकलें!
बुरे काम से सदा बचूं मैं!
सत्कर्मों में लगा रहूं मैं!
मन, वाणी व कर्म हो हितकर!
जीवन होगा सबको सुखकर!
ऐसे बानक रच दो भगवन!
व्यर्थ न जाए मेरा जीवन!
परसेवा कर तुमको ध्याऊं!
जीवन अपना सफल बनाऊं!



-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो. : ०९४११६०७६७२

भक्त सैण जी

(पृष्ठ २९ का शेष)

तरनतारन पंजाब में रखी है। इस ग्रंथ की टाइप की गई फोटो कापी मेरे (स. जसविंदर सिंघ) और असल टाइप कापी देहरा बाबा सैण भगत, प्रतापपुरा में है। मौजूदा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष स. जगदीश सिंघ गोल्हन भी सैण वंशज हैं।

आपकी रचनाओं में ऐसा प्रतीत होता है कि आपके रोम-रोम में भगवान बसा हुआ था। आपका प्रभु से मिलाप हो चुका था। आप ने प्रभु को अनेक नामों से याद किया है। भक्त सैण जी ने बताया कि हरि के नाम की बख़्शिश गुरु से प्राप्त होती है और गुरु सतसंगत से मिलता है। गुरु के अनूरूप चलने से ही प्रभु-मिलाप होता है। कार्य करते हुए प्रभु को याद करना ही जीव-आत्मा का सच्चा धर्म है और मानस की सेवा करना उससे भी बड़ा धर्म है।



शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी

(पृष्ठ ३१ का शेष)

लश्कर के आगे टिकते? कई-कई वैरियों को मारते हुए अंततः सभी सिक्ख शहीद हो गये। बाबा गुरबख़्श सिंघ जी और उनके साथी सिंघों ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

यह घटना २ दिसंबर, सन् १७६४ ई को घटित हुई थी। अब्दाली की फौज ने सभी सिक्खों को शहीद करके श्री हरिमंदर साहिब को ढहा दिया। इस दिन शहीद हुए तीस सिक्खों में से भाई गुरबख़्श सिंघ जी के अलावा भाई मान सिंघ, भाई बसंत सिंघ और भाई निहाल सिंघ भी प्रमुख थे। सभी शहीद सिंघों का अंतिम संस्कार श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे वाली भूमि पर किया गया।

अब्दाली ने भले ही इस जंग में श्री हरिमंदर साहिब को बारूद से उड़ा दिया और अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया परंतु सिंघों ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में कार-सेवा करके जल्द ही श्री हरिमंदर साहिब की नई इमारत निर्मित कर ली और यह पवित्र स्थान पुनः स्थापित हो गया।



गुरबाणी चिंतनधारा : ७५

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥
(पन्ना २८०)

तेरहवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने संत के निंदक की अत्यधिक दुर्दशा तथा पतित स्थिति को विस्तार से चित्रित किया है, जिससे साधारण व्यक्ति को भी दिशा-निर्देश मिल सके। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि संत का निंदक ठीक बीच से टूट जाता है और उसका कोई भी कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण नहीं होता अर्थात् वह मझधार में ही अटक जाता है। फलस्वरूप उसके जीवन में निराशा एवं भटकना बनी रहती है। संत के निंदक को जंगलों में भटकना पड़ता है और भयावह जंगलों में भटकता हुआ वह गुमराह हो जाता है। ऐसे उजाड़ व निर्जन स्थान पर उसे कोई पथ-प्रदर्शक नहीं मिलता और वह निरंतर भटकता हुआ अपना जीवन बर्बाद कर लेता है। संत का दोषी ज़िंदा लाश सदृश्य है, जैसे प्राणों के बिना शरीर। वास्तविक जीवन के उद्देश्य से वंचित, असली सारपूर्ण ज़िंदगी, जो मनुष्य का आधार है और जीवन-सार है, उससे वह खाली होता है। संत के दोषी की जड़ (बुनियाद) नहीं होती अर्थात् संत के निंदकों के पास नेकी और ईमानदारी की, कर्म और श्रम की, ज्ञान और धर्म की कोई नींव नहीं होती, जिसके सहारे श्रेष्ठ जीवन का महल कायम हो सके। अतः संत का दोषी स्वयं ही पाप-कर्मों के बीज बोकर उसके विष रूपी बुरे फल को खाता है। संत के दोषी को कोई भी इस निंदा जैसे पाप-कर्म के फल से बचाने वाला नहीं है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि अगर संत स्वयं चाहे तो निंदक को निंदा जैसे निकृष्ट कर्म से बचाकर उसका उद्धार कर दे।

वस्तुतः निंदा अपने आप में निकृष्ट कार्य है और विशेष तौर पर जब यह निंदा हरि-रूप संत-जनों की जाए तब इसके परिणाम और भी घातक सिद्ध होते हैं, जैसा कि गुरु पातशाह ने उपरोक्त पउड़ी में समझाया है कि किस प्रकार संत के निंदक का जीवन ज़िंदा लाश की तरह है। जीवन के आधार–– दया, धर्म, सेवा, सिमरन, मेहनत की नेक कमाई, मिल-बांटकर खाने का सिद्धांत, इन सब गुणों से वंचित होकर निंदक मझधार में अटक जाता है और जीवन-मार्ग के भयावह जंगलों में भटक जाता है। उसकी बांह पकड़ने वाला कोई नहीं होता। अंत में गुरुदेव जी यही समझाते हैं कि सर्वकला समर्थ प्रभु रूप कृपालु संत चाहें तो निंदक को निंदा-कर्म से बचाकर, उसे प्रभु-भक्ति में लगाकर उसका भवसागर से पार उतारा करवा सकते हैं।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

गुरबाणी में अन्यत्र चौथे पातशाह फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति सच्चे एवं पूर्ण गुरु की निंदा करता है उसे सच्चा प्रभु मारकर खपा देता है। न्याय भरपूर ये वचन परमेश्वर ने स्वयं कहे हैं जो सारी सृष्टि का सृजनहार है :

जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥
एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥ (पन्ना ३०६)

हर हाल में निंदा-कर्म से बचने हेतु परमेश्वर के चरणों में अरदास करनी चाहिए। वही रहमत करके कलयुगी जीवों को इस दुर्दांत विकार से बचाकर जीवन सफल बना सकता है। वाहिगुरु रहमत करें, हमें अपना यह दुर्गुण नज़र आए और हम इससे बचने हेतु अरदास करते रहें।

संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥
संत का दोखी छुटै इकेला ॥
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥
संत का दोखी धरम ते रहत ॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥

तेरहवीं असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु पातशाह ने अनेक दृष्टांत देकर संत के दोषी की अधम स्थिति को चित्रित किया है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि संत का दोषी इस प्रकार बिलखता है अर्थात् व्याकुल होकर छटपटाता है जैसे जल के बिना मछली तड़पती है। संत का निंदक कदाचित तृष्णालु वृत्तियों से शांत नहीं होता अर्थात् उसकी भूख कभी नहीं मिटती। (ठीक वैसे ही) जैसे अग्नि ईंधन से कभी तृप्त नहीं होती वह कभी तृप्त नहीं होता। जिस प्रकार तिलों के खेत में बूआड़ के पौधे को अकेला छोड़ दिया जाता है ठीक उसी तरह संत के दोषी को अकेला छोड़ दिया जाता है। उसकी सार-संभाल करने वाला कोई नहीं होता। संत का दोषी धर्म से अकेला होता है। संत का दोषी सदैव झूठ में लिप्त रहता है अर्थात् झूठे स्वभाव का होता है (मानो) पूर्व में किए निंदा-कर्मों के कारण निंदक को निंदा करने का कार्य प्रारंभ से ही मिला होता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि जो प्रभु को अच्छा लगता है वही होता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जीव की स्वभावगत विशेषता को भी उजागर किया है कि किस प्रकार बार-बार कर्म करने से बने संस्कारों से जीव का वैसा ही स्वभाव बन जाता है। निंदा-कर्म करने के कारण बने स्वभाव के अनुसार जीव सदा निंदा-कर्म में ही प्रवृत्त रहता है। यह सब कुछ परमेश्वर के हुक्म में ही घटित हो रहा है। परमेश्वर ही जानता है कि उसे किस जीव को किस तरह के कर्म में प्रवृत्त करना है। गुरबाणी में तिल के पौधे जैसे दिखने वाले बूआड़ के पौधे की वास्तविकता को अन्यत्र भी स्पष्ट किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी के मुखारबिंद से उच्चरित पावन शबद में भी यही भाव लक्षित होता है कि किस प्रकार जो लोग गुरु के दर्शाए मार्ग पर नहीं चलते और अपने मन में ही बुद्धिमान बने रहते हैं, उनका जीवन उन निरर्थक तिलों के समान दिखने वाले बूआड़ के बीजों जैसा है जिन्हें बेकार समझकर सूने खेतों में फेंक दिया जाता है, जहां उनके अनेक मालिक बन जाते हैं। वे दिखने में तिल जैसे तो लगते हैं लेकिन उनमें तिल के स्थान पर राख ही भरी होती है। इसीलिए मालिक के बिना जीव की क्या दशा होती है, इसका अंदाज़ा सहज

ही लगाया जा सकता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥
(पन्ना ४६३)

वस्तुत: स्वयं को ज्ञानी समझने वाले तुच्छ बुद्धि वाले जीवों की स्थिति ठीक वैसी ही होती है जैसे बूआड़ के पौधे की। वे सांसारिक दृष्टि से तो प्रगति पर होते हैं, लेकिन उनके अंदर नाम के बीज की बजाए विकारों की राख भरी होती है। अहंकारवश वे इसी राख पर ही अभिमान करते रहते हैं।

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥

सातवीं पउड़ी में गुरु पातशाह ने संत के निंदक के विकृत रूप का ज़िक्र करते हुए उसके मरणासन्न रूप को भी दिखाकर उसकी अधम स्थिति को चित्रित करते हुए उसकी निराशाजनक दशा को स्पष्ट किया है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि संत का दोषी (निंदक) विकृत रूप वाला हो जाता है अर्थात् वह देखने में कुरूप होता है। उसे कोई देखना पसंद नहीं करता। उसे परमेश्वर की दरगाह में सज़ा मिलती है। वह सदा मरणासन्न स्थिति में रहता है, अत: मरना एवं जीना दोनों ही उसके लिए दुश्वार हो जाते हैं। वह हमेशा तड़पता ही रहता है। संत के दोषी की आशा कभी फलीभूत (पूरी) नहीं होती। वह निराश ही इस दुनिया से चला जाता है। संत के निंदक को कदाचित शांति एवं स्थिरता नसीब नहीं होती। परमेश्वर को जैसा भाता है (अच्छा लगता है) जीव वैसा ही हो जाता है। भाग्य में लिखे कर्मफल को कोई मिटा नहीं सकता। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि प्रभु ही इस रहस्य को जानता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने जीव के कर्मफल का वर्णन तो किया ही है साथ ही कर्मफल के परिणामस्वरूप बने स्वभाव का भी ज़िक्र किया है कि किस प्रकार बार-बार किए गए कर्म संस्कार और फिर स्वभाव में बदल जाते हैं। संत का सेवक या निंदक होना भी जीव के वश में नहीं है। परमेश्वर दरगाह के लेखों के अनुसार जीव के भाग्य में जो लिख देता है जीव उसी मार्ग की ओर प्रवृत्त हो जाता है। साथ ही इस रहस्य को उद्घाटित कर दिया गया है कि परमेश्वर का साकार रूप संत-जन दयालु और रहमतों का सागर होते हैं। वे अपने कृपालु स्वभाव से निंदक का उद्धार भी कर देते हैं। जैसे दुष्ट अपने दुष्ट स्वभाव का त्याग नहीं करता उसी तरह संत अपने दयालु स्वभाव को नहीं छोड़ते। गुरबाणी में भक्त कबीर जी ने इस संदर्भ में बड़ा सुंदर दृष्टांत देकर जीव को समझाया है कि कोई संत पुरुष किसी का बुरा नहीं कर सकता, ठीक वैसे ही जैसे चंदन का वृक्ष विषैले सर्पों को भी शीतलता प्रदान करता है :

कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥
(पन्ना १३७३)

सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥

प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

अंतिम पउड़ी से पूर्व सातों पउड़ियों में संत के दोषी की अधम स्थिति को अनेक उदाहरणों से समझाया गया है, ताकि कलयुगी जीव को विकृत एवं घिनौने रूप से बचने की प्रेरणा मिले। साथ ही अंतिम पउड़ी में सर्वकला-समर्थ सर्वशक्तिमान परमात्मा का गुणगान करने की प्रेरणा एवं नेक सलाह दी गई है, ताकि जीव उसकी रहमत का पात्र बन सके।

श्री गुरु अरजन देव जी तेरहवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि समस्त जीव परमेश्वर के हैं। यह तन और मन उसी के द्वारा निर्मित है और प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है। उस सृजनकर्ता को नमस्कार, सदा-सदा प्रणाम! परमेश्वर की दिन-रात, हर घड़ी, हर पल श्वास-श्वास महिमा गायन करनी चाहिए। परमेश्वर को प्रत्येक श्वास तथा प्रत्येक ग्रास के साथ याद रखो अर्थात् कोई पल भी उसकी स्तुति के बिना न व्यतीत हो। जगत का प्रत्येक खेल उसके द्वारा निर्मित है अर्थात् संसार में जो कुछ भी हो रहा है उसका कर्ता प्रभु स्वयं ही है। वह जैसा करना चाहता है या करता है ठीक वैसा ही होता है। यह जगत उसका खेल है और प्रभु स्वयं उसे खेलने वाला सूत्रधार है। दूसरा कोई इस संदर्भ में अपनी राय नहीं दे सकता। कोई इस संदर्भ में विचार करने की सामर्थ्य नहीं रखता। जिस पर प्रभु कृपालु होता है, उसे अपना नाम बख़्श देता है। पंचम पातशाह (अंतिम पंक्ति में) उसे ही परम भाग्यशाली मानते हैं जिसे परमेश्वर सर्वोत्तम दात, नाम-दान बख़्श देता है। वही जीव पूर्ण भाग्यशाली है।

वस्तुत: वह परवरदिगार बड़ा मनमौजी है। उसके जी में जो आता है वह वही कुछ करता है और इस सबके लिए उसे किसी की सहायता या सलाह की ज़रूरत नहीं पड़ती। वह सर्वकला सम्पूर्ण है। वह जीव को जैसा चाहता है वैसा ही बना देता है और जिस पर सबसे अधिक कृपा करता है उसे अपनी सिफत-सलाह बख़्शकर निहाल कर देता है, सर्वोत्तम दान नाम-दान बख़्श देता है, जैसा कि अरदास में *"दानां सिर दान नाम दान"* की याचना की जाती है। इस दात की प्राप्ति के बाद कोई मांग शेष नहीं रह जाती और जीव उसकी प्राप्ति के उपरांत याचक न रहकर दातार पिता का ही रूप हो जाता है; नाम और नामी अभेद हो जाते हैं, जो कि मानव जीवन का परम लक्ष्य है। गुरबाणी में बार-बार श्वास-ग्रास परिपूर्ण परमेश्वर की बंदगी एवं सिमरन के लिए प्रेरित किया गया है :

जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥
सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥ *(पन्ना ३८२)*

सचमुच जिस पर प्रभु की रहमत हो जाती है उसी भाग्यशाली की झोली में यह सर्वोत्तम दात पड़ जाती है; वही श्वास-श्वास उसका पावन नाम जपकर अपना जीवन सार्थक एवं धन्य बना लेता है, यथा गुरबाणी का प्रमाण है :

दुलभ देह आई परवानु ॥
सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥
कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥
सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥ (पन्ना ११४८)



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १५

स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला'

*–स. रूप सिंघ**

पैप्सू के मुख्यमंत्री, पटियाला रियासत की हाईकोर्ट के जज, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष आदि महत्त्वपूर्ण पदवियों पर सुशोभित रहे स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' का जन्म उनकी ननिहाल में १६ दिसंबर, १९०१ को स. रतन सिंघ बिसवेदार के घर गांव भड़ी, ज़िला लुधियाना में हुआ। स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' ने अक्षर-ज्ञान ननिहाल गांव भड़ी व समराला से प्राप्त करके मॉडल हाई स्कूल, पटियाला से दसवीं का इम्तिहान उत्तीर्ण किया। महिंदरा कॉलेज, पटियाला से सन् १९२५ में ग्रेजुएशन करके पटियाला रियासत की सिविल सर्विस में सहायक डिप्टी कमिश्नर नियुक्त हुए, तत्पश्चात पटियाला के डिप्टी कमिश्नर बने। आप जी महाराजा यादविंदर सिंघ पटियाला के मामा जी थे। शाही घराने में पले-बढ़े होने के बावजूद भी बढ़प्पन का अहंकार नहीं था सरदार राड़ेवाला को। इनका अनंद कारज बीबी मनमोहन कौर के साथ हुआ। इनके घर चार सुपुत्र व एक सुपुत्री बीबी निरलेप कौर पैदा हुई।

स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' १९४२ ई. में पटियाला रियासत की हाईकोर्ट के मुख्य जज बन गए। देश-विभाजन के समय इन्होंने हिंदू-सिक्ख हिजरतकारियों की तन-मन से मदद की। आप जी कुछ समय कृषि मंत्री भी रहे। १९४८ ई. से १९५२ ई. तक आपको पैप्सू के मुख्यमंत्री के पद पर विराजमान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मातृ-भाषा पंजाबी के विकास के लिए पंजाबी विभाग आरंभ करवाया और पंजाबी सूबे की डटकर हिमायत की। पैप्सू के मुख्यमंत्री होने के समय आप जी ने मातृ-भाषा पंजाबी को स्कूलों में शिक्षा का माध्यम और अदालतों के कामकाज की भाषा बनाकर बहुमूल्य एवं ऐतिहासिक सेवा की। पंजाबी भाषा के विकास तथा सेवा-संभाल के लिए बनी पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला को आरंभ करने में भी सरदार साहिब की विशेष भूमिका व योगदान था। स. तरलोचन सिंघ, पार्लियमेंट सदस्य के लिखे ख़त के मुताबिक, "जब वे (स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला') मुख्यमंत्री पैप्सू थे तो श्री अमृतसर में १९५३ ई के आखिर में मोर्चा लगा हुआ था। श्री भीम सेन सच्चर मुख्यमंत्री पंजाब थे। स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' को मुख्यमंत्री पद से भारत सरकार ने हटा दिया था। उन्होंने एलान किया कि वे अगले जत्थे में गिरफ़्तारी देंगे, किंतु तभी मोर्चा समाप्त हो गया। उस वक्त एक जत्था पटियाला से उनकी पत्नी सरदारनी मनमोहन कौर भी लेकर गयी थी, परंतु उनको गिरफ़्तार नहीं किया गया। एक बार श्री अमृतसर में कर्फ्यू लगा था, तो सरदार राड़ेवाला जबरदस्ती पुलिस नाका तोड़कर श्री दरबार साहिब पहुंच गए थे। बतौर मुख्यमंत्री, पंजाबी विभाग तथा पिछड़ी श्रेणियों के लिए अलग विभाग बनाया। पहला हरिजन अफ़सर भी उन्होंने बनाया तथा स. मीहां सिंघ (गिल्ल) को वज़ीर बनाया आदि।"

१९५४ ई. में अकाली दल की मिलीजुली सरकार में आप जी विरोधी दल के नेता बने।

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

१९५४ ई में ही आप दोबारा मुख्यमंत्री बन गए परंतु उनका चुनाव रद्द होने के कारण उनको मुख्यमंत्री-पद त्यागना पड़ा। वे 'पंजाबी सूबा ज़िंदाबाद' नारे के मोर्चे के समय डिक्टेटर रहे। सरकार ने इनको गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया। १ नवंबर, १९५६ ई को पैप्सू को पंजाब में शामिल कर दिया गया तो आप अपने बहुत सारे अकाली संगी-साथियों समेत कांग्रेस में शामिल हो गए। आप स. प्रताप सिंघ कैरों सरकार के मंत्री-मंडल में बिजली व सिंचाई विभाग के मंत्री बने। इनके यत्नों का सदका पंजाब के सिक्ख विधानकारों की सहमति से भाषा के आधार पर अन्य राज्यों की तरह पंजाबी सूबा बनाने की ज़ोरदार मांग उठी।

७ फरवरी, १९५५ ई को हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पहले जनरल इजलास में स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' नामज़द सदस्य के रूप में हाज़िर थे। इसी दिन ही ये कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। ७ जुलाई, १९५५ ई को कार्यकारिणी के प्रस्ताव नंबर ११०७ के अनुसार अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के रिक्त स्थान को भरने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष पद हेतु चेयरमैन साहिब ने कोई नाम पेश करने की मांग की। स. जसबीर सिंघ ने स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' कार्यकारिणी सदस्य का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया तथा स. करनैल सिंघ ने ताईद की। अन्य कोई नाम पेश न हुआ, इसलिए आप अस्थाई रूप से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की जनरल एकत्रता तक सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए। प्रस्ताव संख्या ११०८ के अनुसार आप के अध्यक्ष चुने जाने के कारण कार्यकारिणी सदस्य की रिक्त जगह को भरने के लिए स. हरनाम सिंघ फिरोज़पुरी अस्थाई रूप से कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

प्रस्ताव संख्या १५७२, दिनांक १४ अक्तूबर, १९५५ ई के अनुसार बाढ़-पीड़ितों की मदद हेतु शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा बाढ़-पीड़ित क्षेत्र के लोगों के लिए खाने का प्रबंध करने हेतु अलग-अलग सज्जनों की ड्यूटी लगाई गयी, जिसमें आप जी को पटियाला ज़िले की सेवा सौंपी गयी। १६ अक्तूबर, १९५५ ई को हुए जनरल समागम के समय स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' (पैप्सू) नामज़द सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के रूप में हाज़िर थे। १६ अक्तूबर, १९५५ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की जनरल एकत्रता के समय स. करतार सिंघ सुपुत्र स. शंकर सिंघ, ज़िला फिरोज़पुर, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. नाज़र सिंघ, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा स. साधू सिंघ लायलपुरी सदस्य के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित किये गये। इसी समय बाढ़-पीड़ितों की ज्यादा से ज्यादा सहायता करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

प्रो. सतिबीर सिंघ ने प्रस्ताव पेश किया कि "शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का आज का जनरल इजलास राज्यों की नयी हदबंदी करने वाले कमीशन की रिपोर्ट, जिसमें शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा की गयी पंजाबी राज्य की सर्व-सम्मति वाली मांग को रद्द करके महा पंजाब बनाने की तजवीज़ की गयी है, बिलकुल ही नामंजूर करता है तथा सरकार-हिंद पर ज़ोर देता है कि इस तजवीज़ को नामंजूर कर दे और तुरंत ही पंजाबी राज्य बनाने की कार्यवाही करे।" काफी बहस के पश्चात यह प्रस्ताव पारित किया गया।

१६ अक्तूबर, १९५५ ई को मास्टर तारा सिंघ जी फिर सर्व-सम्मति से अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। कार्यकारिणी के चुनाव के समय स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला', सदस्य, कार्यकारिणी चुने गए। इस तरह सरदार राड़ेवाला

७ जुलाई, १९५५ ई से १६ अक्तूबर, १९५५ ई तक ही शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष के रूप में कार्यशील रहे।

१९५७ ई में स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए तथा सिंचाई मंत्री के पद पर कार्यशील रहे। १९६२ ई तथा १९६७ ई में सरदार साहिब कांग्रेस पार्टी द्वारा एम. एल. ए. चुने गए तथा कांग्रेस विधानकार पार्टी के मुखिया रहे। १९६९ ई में कांग्रेस पार्टी को अलविदा कहकर वे फिर अकाली दल में शामिल हो गए तथा आख़िरी दम तक अकाल के पुजारी अकाली रहे। आप सब्र-संतोष वाले सिक्ख नीतिवेत्ता थे। वे समय के अनुसार सिद्धांत के साथ समझौता नहीं करते थे। उनकी सुपुत्री बीबी निरलेप कौर सिक्ख राजनीति में काफी सक्रिय रहीं तथा राज्य सभा की सदस्य भी रहीं।

बीमारी के समय सक्रिय सियासत से सन्यास लेने के उपरांत भी सरदार राड़ेवाला पंथक सरगर्मियों तथा राजनीति के साथ जुड़े रहे और पंथ की चढ़दी कला हेतु हमेशा प्रयत्नशील रहे। आप बुद्धिमान, गुरसिक्ख नीतिवेत्ता, योग्य प्रबंधक, राजनीति की जगह धर्म को प्राथमिकता देने वाले, ईमानदार, अहंकार से दूर सिक्ख नेता थे।

दीर्घ काल बीमारी से संघर्ष करते हुए ३१ दिसंबर, १९७९ ई को स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला' दिल्ली में परलोक गमन कर गए। इस दिन पंजाब सरकार तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का कार्यालय व सम्बंधित अदारे शोक व्यक्त करते हुए बंद रखे गए। दो दिन बाद इनकी मृतक देह का अंतिम संस्कार इनके पैतृक गांव राड़ेवाला में किया गया। १ जनवरी, १९८० ई के 'द ट्रिब्यून' समाचार-पत्र के अनुसार जत्थेदार गुरचरन सिंघ जी 'टौहड़ा', अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी आप जी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए तथा एलान किया कि सरदार राड़ेवाला की तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में लगाई जाएगी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का बजट इजलास मार्च, १९८० ई में जत्थेदार गुरचरन सिंघ जी 'टौहड़ा' की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें स. गिआन सिंघ 'राड़ेवाला', भूतपूर्व मुख्यमंत्री तथा भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया।

ख़बरनामा

कोरियन के युद्ध के हीरो सिक्ख फौजियों का सम्मान प्रशंसायोग्य : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १२ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने कनाडा के भूतपूर्व फौजियों का साप्ताहिक समारोह के दौरान १९५० ई के कोरियन युद्ध में हिस्सा लेने वाले सिक्ख-सिपाहियों का कनाडा के एम. पी. परम गिल्ल द्वारा सिक्ख हैरीटेज म्यूज़ियम में सम्मानित किया जाना एक प्रशंसायोग्य कदम बताया है उन्होंने कहा कि इससे पहले भी द्वितीय विश्व युद्ध में हिस्सा लेने वाले सिक्ख फौजियों को बरतानिया सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि विश्वभर में सिक्ख जिस भी देश में बसते हैं उस देश की सुरक्षा तथा तरक्की में योगदान डाल रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक तरफ सिक्खों को अच्छे कार्यों सदका विदेशों में सम्मानित किया जा रहा है तथा साथ ही कुछ देश सिक्खों के धार्मिक चिन्ह तथा सिक्खों की पहचान की प्रतीक दसतार पर पाबंदी लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कितनी भी मुश्किलें आ जाएं किंतु सिक्ख अपना फर्ज़ कभी नहीं भूलते।

उन्होंने कहा कि जो देश सिक्खों के धार्मिक चिन्ह तथा पहचान की प्रतीक दसतार पर पाबंदी लगा रहे हैं, उन देशों को चाहिए कि ये सिक्खों की भावनायों की कद्र करें।

क्यूबेक सरकार द्वारा विवादित बिल विधान सभा में पेश करना तथा दूसरे धर्मों के साथ धक्केशाही : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ८ नवंबर : कनाडा की पक्षपाती क्यूबेक सरकार द्वारा देश भर में हो रहे विरोध के बावजूद सिक्खों तथा अन्य धर्मों के धार्मिक चिन्हों पर पाबंदी लगाना धक्केशाही है। इन शब्दों का प्रकटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थे. अवतार सिंघ ने कार्यालय से जारी प्रेस रिलीज़ नोट द्वारा किया। उन्होंने कहा कि क्यूबेक की सूबा सरकार द्वारा सिक्खों तथा अन्य धर्मों की धार्मिक भावनायों का ख़्याल रखे बिना ही उनके धार्मिक चिन्हों पर पाबंदी लगाने वाले चार्टर ऑफ क्यूबेक वैलियूज़ के मसौदे को अंतिम रूप देना सरकार की तानाशाही नीतियों का सबूत है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी कनाडा के विरोधी दल की पार्टियों तथा विदेशों में बसते समूचे सिक्खों तथा अलग-अलग भाईचारे के लोगों के विरोध करने पर कनाडा की क्यूबेक सरकार को इस पर गंभीरता से विचार करने के लिए कहा गया था परंतु इसके बावजूद भी वे स्कूलों, कॉलजों के विद्यार्थियों पर सरकारी नौकरियों पर तैनात पुलिस अधिकारियों, जजों, अध्यापकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के साथ धक्केशाही है। उन्होंने कहा कि सिक्खों के धार्मिक चिन्ह दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा उनको दी गयी पहचान है जिसको कदाचित भी अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने भारत के प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ को दोबारा अपील करते हुए कहा कि वह कनाडा के प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर को पत्र लिखकर सिक्खों के साथ ही रही बे-इन्साफी के विरुद्ध तुरंत कार्यवाही करवाएं।

बरतानिया सरकार द्वारा दूसरे विश्व-युद्ध में लड़ने वाले सिक्ख सैनिकों को सम्मानित करना प्रशंसनीय

श्री अमृतसर : १९ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने बरतानिया सरकार द्वारा दूसरे विश्व-युद्ध में लड़ने वाले सिक्ख सैनिकों को सम्मानित करना प्रशंसनीय कदम बताया है। कार्यालय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से जारी प्रेस विज्ञप्ति में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इससे विश्व भर की सेनाओं ने सेवा निभा रहे सिक्ख सैनिकों के हौसले और भी बुलंद होंगे।

उन्होंने कहा कि बरतानिया सरकार द्वारा सिक्ख सैनिकों को दिया गया यह दूसरा बड़ा सम्मान है। इससे पहले सन् १८९७ में हुई सारागढ़ी की लड़ाई में शहीद होने वाले २१ सिक्ख सैनिकों को भी बरतानिया सरकार ने 'इंडियन आर्डर ऑफ मैरिट' के खिताब से सम्मानित किया था जो सिक्खों के लिए गर्व वाली बात है। उन्होंने कहा कि बरतानिया सरकार द्वारा इतिहास को दोहराते हुए वहां के समाज कल्याण मंत्री एरिक पिक्सल द्वारा भूतपूर्व सैनिक स. समित्तर सिंघ, स. गुलजारा सिंघ, स. रजिंदर सिंघ दत्त तथा स. मुखतिआर सिंघ को 'पंजाब रत्न अवार्ड' से सम्मानित करने से पूरे विश्व में बस रहे सिक्ख भाईचारे का सिर ऊंचा हुआ है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि दूसरे विश्व-युद्ध में फ्रांस के लिए भी वहां की सेना में भर्ती सिक्खों ने लड़ाई लड़ी थी, मगर फ्रांस सरकार सिक्खों द्वारा दिखाई वीरता को भुलाकर सिक्खों की दसतार आदि पर पाबंदी लगाकर जो रवैया अपना रही है, वो ठीक नहीं है। फ्रांस सरकार को चाहिए कि वो सिक्खों की भावनाओं का ख़्याल रखते हुए दसतार आदि पर लगी पाबंदी को तुरंत हटाए तथा उनके मान-सम्मान की बहाली सुनिश्चित करवाए।

एनीमेशन फिल्म 'सिंघ सूरमे' रिलीज़ की गई

श्री अमृतसर : २४ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सिक्खी प्रचार में और तेजी लाने के विचार से धार्मिक फिल्मों को माध्यम बनाया जा रहा है। इसी शृंखला में टू. डी. एनीमेशन फिल्म 'सिंघ सूरमे' तैयार करवाई गई है।

फिल्म को रिलीज करते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि वंडर मीडिया, श्री अमृतसर द्वारा तैयार की गई इस फिल्म में १८वीं सदी की घटनाओं की याद को ताजा करवाते हुए, भाई सुक्खा सिंघ-भाई महिताब सिंघ की बहादुरी का बाखूबी वर्णन है। उन्होंने बताया कि डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी द्वारा लिखी स्क्रिप्ट वाली यह फिल्म ५५ मिनट की है तथा इस फिल्म के कापीराइट धर्म प्रचार कमेटी के पास सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि यह फिल्म वीडियो वैन के जरिए संगत को दिखाई जाएगी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२०१३